अंक-31 | वर्ष-2025

# राजप्रभा

## विभागीय पत्रिका

पत्रिका गेट, जयपुर

**केंद्रीय वस्तु व सेवा कर एवं सीमा शुल्क, जयपुर**

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर

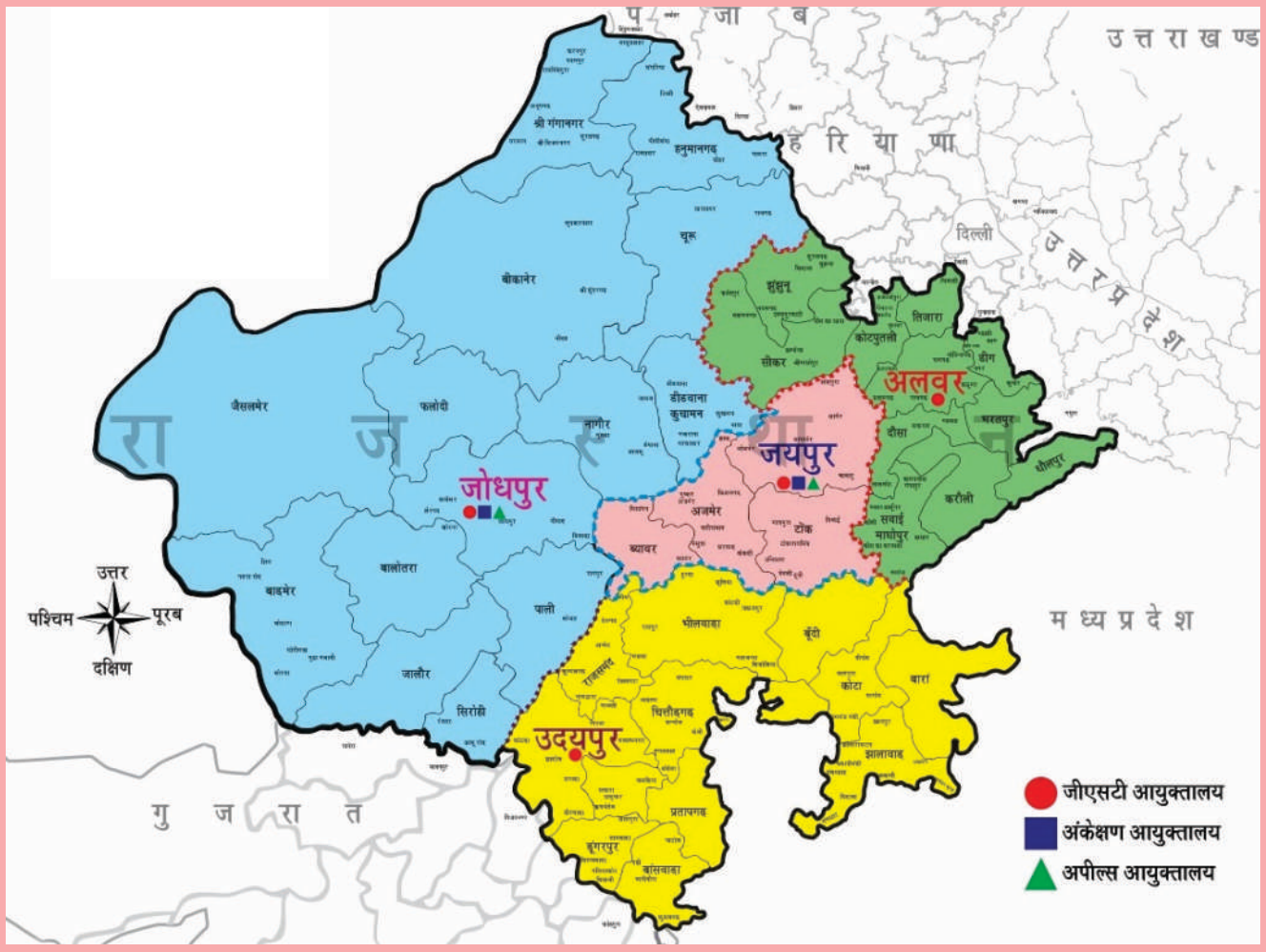


# सीजीएसटी, जयपुर ज़ोन, जयपुर का क्षेत्राधिकार

# राजप्रभा

विभागीय पत्रिका

अंक - 31 विक्रम संवत्-2082 वर्ष -2025

संरक्षक
श्री अनुज गोगिया
मुख्य आयुक्त

प्रधान संपादक
श्री गौरव कुमार
प्रधान आयुक्त

प्रबंध संपादक
सुश्री आर्निका यादव
संयुक्त आयुक्त

संपादक
श्री बाबूलाल मीना
सहायक निदेशक (राजभाषा)

कार्यकारी संपादक दल
श्री अशोक कुमार बिरानियां, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्रीमती नीता शुक्ल, वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री प्रेम प्रकाश मीना, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी
श्री संदीप मीना, कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी

केवल विभागीय प्रयोगार्थ

1. पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में अभिव्यक्त विचारों से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
2. पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ मौलिक ही हैं ऐसा सुनिश्चित करना सम्पादक मण्डल के लिए संभव नहीं है।

# अनुक्रमणिका


| | | |
|---|---|---|
| 1. | संदेश | 3–4 |
| 2. | संरक्षक की कलम से | 5 |
| 3. | प्रधान संपादक की कलम से | 6 |
| 4. | संदेश | 7–14 |
| 5. | प्रबंध संपादक की कलम से | 15 |
| 6. | संपादक की कलम से | 16 |
| 7. | स्त्रियों की मौन पुकार : पौराणिक कथाओं से आज की औरत तक | 17–19 |
| 8. | हास्य–विनोद | 20–21 |
| 9. | उम्र आराम करने की | 22 |
| 10. | सशर्त | 23–25 |
| 11. | जो है, सो है | 26 |
| 12. | राजभाषा समारोह–2024 की झलकियाँ | 27–28 |
| 13. | राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा प्रदत्त पुरस्कार | 29 |
| 14. | डिक्टेशन/टिप्पण आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार | 30–32 |
| 15. | न.रा.का.स. द्वारा प्रदत्त पुरस्कार | 33 |
| 16. | स्वाधीनता दिवस समारोह | 34 |
| 17. | भाई या भार | 35 |
| 18. | स्वविवेक | 36 |
| 19. | कविताएँ | 37–38 |
| 20. | फ़कीर | 39–40 |
| 21. | इक एकेली बूँद | 40 |
| 22. | आशुलिपिक : संवाद और संयोजन का मौन सूत्रधार | 41 |
| 23. | मैं रघुवर हूँ | 42 |
| 24. | स्वच्छता पखवाड़ा – 2024 | 43 |
| 25. | योग दिवस | 44 |
| 26. | साईकिल रैली की झलकियाँ | 45–46 |
| 27. | जीएसटी दिवस समारोह | 47–48 |
| 28. | सीमा शुल्क दिवस समारोह | 49–52 |
| 29. | डाटा दरबार | 53 |
| 30. | कैंसर : मेरा अनुभव | 54–55 |
| 31. | फिर भी माँ बहुत अच्छी लगती है | 56–57 |
| 32. | हॉस्टल जाने के दिन | 58 |
| 33. | कुछ संवेदना प्रकृति के नाम | 59–60 |
| 34. | दर्शन देखूँ या दर्द? | 60 |
| 35. | कविताएँ | 61 |
| 36. | अंगद | 62 |
| 37. | मैं भी छोटा हूँ... | 63–65 |
| 38. | बरसात का एक दिन | 66 |
| 39. | अधूरापन... | 66 |
| 40. | हृदय और मानस | 67–68 |
| 41. | माँएं रिटायर कहाँ होती है... | 69 |
| 42. | समाज | 70 |
| 43. | गज़ल | 70 |
| 44. | चित्रकारी | 71–75 |
| 45. | विभागीय प्रतिभा | 76 |

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

# संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-ज़ोन, जयपुर द्वारा विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' के 31वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। विभागीय पत्रिकाओं का प्रत्येक अंक न केवल विभागीय गतिविधियों का दर्पण बनकर उभरता है, बल्कि यह राजभाषा हिंदी के प्रति अधिकारियों की आस्था, लगन और निष्ठा का भी परिचायक है। विभागों में हिंदी पत्रिकाएं निश्चित रूप से हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक प्रभावशाली माध्यम सिद्ध हो रही हैं।

मैं यह भी कहना चाहूँगा कि दैनिक दायित्वों के बीच समय निकालकर इस प्रकार की रचनात्मक एवं सृजनात्मक गतिविधियों में सहभागिता करना प्रशंसनीय है। इससे विभागीय कार्य-संस्कृति में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। 'राजप्रभा' के प्रकाशन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से योगदान देने वाले सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को मैं विशेष रूप से बधाई देता हूँ।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि ''राजप्रभा' भविष्य में भी राजभाषा के विकास एवं संवर्धन में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती रहेगी और सतत प्रकाशित होती रहेगी।

शुभकामनाओं सहित,

संजय कुमार

**(संजय कुमार अग्रवाल)**

सत्यमेव जयते

सदस्य (जीएसटी)
केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड
नई दिल्ली

# संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-ज़ोन, जयपुर द्वारा विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' का आगामी अंक प्रकाशित किया जा रहा है। राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित करने तथा सद्भाव एवं प्रोत्साहन के माध्यम से अधिकारियों की हिंदी के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने में हिंदी पत्रिकाओं का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान होता है।

हिंदी बहुत ही सहज एवं सरल भाषा है तथा विभागीय पत्र-पत्रिकाएं विचारों और अनुभवों के संप्रेषण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हिंदी भाषा की विशेषता इसकी सहजता, सरलता एवं नवीन शब्दों को आत्मसात करने की क्षमता में निहित है। यही कारण है कि हिंदी न केवल अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है, बल्कि विविध भाषाओं और बोलियों से समृद्ध होती हुई निरंतर विकास की ओर अग्रसर है।

पत्रिका के संपादक मंडल एवं समस्त सहयोगियों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

शशांक प्रिय

**(शशांक प्रिय)**

सत्यमेव जयते

मुख्य आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर ज़ोन
जयपुर

# संरक्षक की कलम से

यह मेरे लिए अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर जयपुर-ज़ोन,जयपुर में वार्षिक विभागीय हिन्दी पत्रिका 'राजप्रभा' का प्रकाशन किया जा रहा है और संक्षरक के रूप में इस पत्रिका से जुड़कर मुझे बेहद सुखद अनुभव की अनुभूति हो रही है। हिंदी हमारी सांस्कृतिक आत्मा की भाषा है, जो न केवल संवाद का माध्यम है, अपितु हमारे विचारों, भावनाओं और सामाजिक मूल्यों की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन भी है।

विभागीय हिंदी पत्रिकाएं न केवल भाषा के संवर्धन की दिशा में एक अनूठा प्रयास हैं, बल्कि यह हमारे विभाग के कार्मिकों की रचनात्मकता, अभिरुचि और विचारों की विविधता को प्रकट करने हेतु एक प्रेरक मंच भी हैं। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के माध्यम से हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और भी सुदृढ़ होगी।

हिंदी के प्रगामी प्रयोग को प्रोत्साहित करना राजभाषा विभाग के प्रमुख दायित्वों में से एक है और कार्यालय में इस प्रकार की पत्रिकाओं का प्रकाशन इस दायित्व को पूरा करने में उपयोगी सिद्ध हुआ है। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि आने वाले वर्षों में यह पत्रिका केवल विभागीय गतिविधियों और साहित्यिक लेखन का माध्यम न रहकर एक सशक्त बौद्धिक संवाद का मंच बनेगी। साथ ही यह हम सभी को हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित करेगी।

मैं पत्रिका के संपादक मंडल को इस रचनात्मक प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि 'राजप्रभा' पत्रिका का प्रकाशन भविष्य में भी इसी उत्साह और गुणवत्ता के साथ निरंतर आगे बढ़ेगा।

अनुज गोगिया

**(अनुज गोगिया)**

सत्यमेव जयते

प्रधान आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

# प्रधान संपादक की कलम से

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर,जयपुर-ज़ोन,जयपुर की विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' के इस संस्करण को आप सभी के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यधिक हर्ष का अनुभव हो रहा है। यह पत्रिका न केवल हमारे विभागीय कार्यों, उपलब्धियों और नीतियों का दर्पण है, बल्कि हमारी भाषा, संस्कृति और रचनात्मक अभिव्यक्ति का भी सशक्त माध्यम बन चुकी है। यह मंच न केवल साहित्यिक अभिरुचि को प्रोत्साहित करता है, बल्कि हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

विभागीय दायित्वों के निर्वहन के साथ-साथ हमारे अधिकारी एवं कर्मचारी जिस उत्साह और प्रतिबद्धता के साथ रचनात्मक लेखन में भाग लेते हैं, वह निश्चय ही प्रशंसनीय है। इस अंक में प्रकाशित रचनाएँ न केवल मनोरंजन प्रदान करती हैं, बल्कि विचारों को प्रेरणा भी देती हैं।

इस अंक में हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा लिखे गए लेख, कविताएँ, अनुभव-साझा करने वाले संस्मरण तथा विश्लेषणात्मक लेख विभाग के बौद्धिक पक्ष को उजागर करते हैं। यह पत्रिका हमारी आंतरिक क्षमताओं को सामने लाने के साथ-साथ हमें आत्मचिंतन और आत्मविकास का अवसर भी देती है।

मैं 'राजप्रभा' की संपादकीय टीम और इसमें सहयोग देने वाले सभी अधिकारियों को उनकी लगन, सृजनशीलता और योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। मुझे विश्वास है कि यह पत्रिका भविष्य में भी हमारी विभागीय पहचान को समृद्ध बनाएगी और हम सभी को प्रेरित करती रहेगी।

गौरव कुमार

**(गौरव कुमार)**

सत्यमेव जयते

प्रधान आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जोधपुर

# संदेश

विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' से जुड़ना मेरे लिए एक सुखद अनुभव है। यह केवल एक प्रकाशन नहीं, बल्कि राजभाषा हिंदी के प्रति हमारी प्रतिबद्धता और रचनात्मक अभिव्यक्ति का प्रतीक है। हिंदी देश की जनभाषा ही नहीं, प्रशासनिक संवाद की शक्ति भी है। ऐसे प्रयास न केवल भाषा के संवर्धन में सहायक होते हैं, बल्कि विभागीय कार्य संस्कृति को भी समृद्ध करते हैं।

मैं 'राजप्रभा' पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति और निरंतर विकास की कामना करता हूँ और यह अपेक्षा करता हूँ कि हम सभी अधिकारीगण राजभाषा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु निरंतर प्रयासरत रहेंगे तथा सरकारी कार्यों में हिंदी के व्यापक उपयोग को प्राथमिकता देंगे।

मैं आशा करता हूँ कि अपने पूर्व अंकों की भाँति पत्रिका का यह अंक भी अपार सफलता अर्जित करेगा।

शुभकामनाओं सहित,

**(एस.अनंता कृष्णन)**

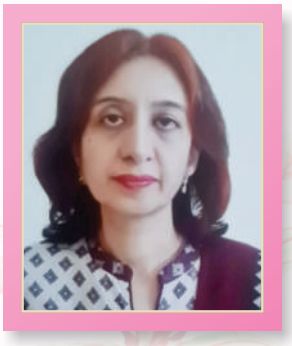

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जोधपुर

# संदेश

यह बहुत प्रसन्नता का विषय है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर तथा सीमा शुल्क, जयपुर से अनवरत रूप से विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' का प्रकाशन जारी है। यह पत्रिका अपने नाम की सार्थकता सिद्ध करते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार में अहम योगदान देते हुए अपनी आभा चारों दिशाओं में फैला रही है। पत्रिका के निरंतर प्रकाशन से यह भी प्रकट होता है कि इस कार्यालय में राजस्व संग्रहण की तरह हिंदी के संवर्धन को भी अहम स्थान दिया गया है।

'राजप्रभा' के माध्यम से विभागीय गतिविधियों, नवाचारों और कर्मचारियों की प्रतिभा को उजागर करने का यह प्रयास निश्चित रूप से प्रेरणादायक है। मैं संपादकीय टीम सहित सभी सहयोगियों को इस उपलब्धि के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ तथा इस प्रयास की निरंतर सफलता की कामना करती हूँ।

(अंबिका शरणजीत कौर)

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय,
उदयपुर

# संदेश

यह बहुत प्रसन्नता का विषय है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर तथा सीमा शुल्क, जयपुर से अनवरत रूप से विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' का प्रकाशन जारी है। 'राजप्रभा' का 31वाँ अंक इस बात का एक सशक्त उदाहरण है कि कैसे समर्पण, रचनात्मकता और भाषा के प्रति प्रेम मिलकर एक उत्कृष्ट कृति को जन्म देते हैं। केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-जोन के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा राजभाषा हिंदी को कार्य संस्कृति में समाहित करने का यह प्रयास अत्यंत प्रेरणादायक है। विभागीय पत्रिका के माध्यम से भाषा के प्रति जुड़ाव को जीवंत बनाए रखना एक प्रशंसनीय कार्य है।

'राजप्रभा' के इस अंक को शोभायमान करने वाले सभी अधिकारियों को मैं हार्दिक बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि 'राजप्रभा' इसी ऊर्जा और नवाचार के साथ आगे भी प्रकाशित होती रहेगी।

अमिता सिंह

**(अमिता सिंह)**

सत्यमेव जयते

आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अपील आयुक्तालय,
जयपुर

# संदेश

मैं 'राजप्रभा' पत्रिका के 31वें अंक के प्रकाशन पर संपादकीय मंडल एवं केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर जयपुर-ज़ोन, जयपुर के समस्त अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

यह पत्रिका विभागीय अधिकारियों की राजभाषा हिंदी के प्रति प्रतिबद्धता, रचनात्मक सोच और समर्पण को प्रतिबिंबित करती है। हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु इस प्रकार की पहल न केवल प्रशंसनीय है, अपितु राजभाषा नीति के सफल क्रियान्वयन में भी सहायक है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'राजप्रभा' आगामी वर्षों में भी राजभाषा प्रचार-प्रसार का एक प्रभावी माध्यम बनी रहेगी तथा निरंतर उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होगी।

**(गौरव सिन्हा)**

सत्यमेव जयते

आयुक्त,
सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर
मुख्यालय जयपुर

# संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर एवं उत्पाद शुल्क, जयपुर ज़ोन, जयपुर द्वारा विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के 31वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को आधिकारिक रूप से भारत की राजभाषा के तौर पर स्वीकार किया गया और भारतीय संस्कृति के संपर्क सूत्र के रूप में इसके संवर्धन और विकास का महती कार्य जनमानस के साथ-साथ सरकार और उसके अधीनस्थ कार्यालयों को भी दिया गया।

हिंदी को भारतीय जनमानस ने अपने संघर्ष, अपनी स्मृतियों और कल्पनाओं से सींचा है और इसमें भारतीय सांस्कृतिक चेतना का स्वर होने का सामर्थ्य है। राजभाषा हिंदी के संवर्धन के इस पुनीत कार्य को केंद्रीय कार्यालयों द्वारा विभागीय पत्रिकाओं, कार्यशालाओं, राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों, विभागीय कामकाज में अधिकतम उपयोग आदि के माध्यम से कुशलतापूर्वक निभाया जा रहा है। इस कड़ी में केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर एवं उत्पाद शुल्क, जयपुर जोन, जयपुर द्वारा विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' की विषय वस्तु एवं रचनात्मकता अत्यंत प्रभावी है।

इस समृद्ध पत्रिका के प्रकाशन के लिए संपादक मंडल को साधुवाद और भविष्य में इस परंपरा को जारी रखने हेतु अनंत शुभकामनाएँ।

**(आर. के. चन्दन)**

सत्यमेव जयते

आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, अलवर

# संदेश

यह अत्यंत प्रसन्नता का विषय है कि राजस्थान ज़ोन में विभागीय हिन्दी पत्रिका 'राजप्रभा' के आगामी अंक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

हिंदी भाषा की सरल शैली इसे हमारी अभिव्यक्ति सम्प्रेषण का भी एक अहम स्त्रोत बनाती है। इस उद्देश्य के साथ ही राजभाषा पत्रिका 'राजप्रभा' विभाग में कार्यरत अधिकारियों एवं उनके परिवार के सदस्यगणों को अपनी साहित्यिक अभिरूचि को साकार करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि विविधता में एकता को दर्शाने वाली यह पत्रिका अपने बहुआयामी दायित्व में पूर्णरूपेण सफल होगी।

केंद्र सरकार के सभी विभागों में भिन्न-भिन्न प्रान्तों के विभिन्न भाषा-भाषी अधिकारीगण कार्य करते हैं। उनकी विभिन्न संस्कृतियों एवम् अन्य विविधताओं के आदान-प्रदान के लिए एक सामान्य सूत्र भाषा की आवश्यकता होती है जिसका दायित्व हिंदी बखूबी निभा रही है।

पत्रिका की सफलतार्थ मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

सुमित यादव

**(सुमित यादव)**

सत्यमेव जयते

आयुक्त,
केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय,जयपुर

# संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर जयपुर-ज़ोन, जयपुर द्वारा विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के आगामी अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजभाषा हिन्दी नवीन शब्द रचना की दृष्टि से विलक्षण है एवं अन्य भाषाओं एवं बोलियों आदि के शब्द ग्रहण करने में भी संकोच नहीं करती है। हिन्दी के इसी गुण के कारण इसका साहित्य बहुत समृद्धशाली है। हिन्दी साहित्य की लोकप्रियता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसकी प्रमुख रचनाओं का अधिकतर भाषाओं में अनुवाद हो चुका है ।

मैं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए पत्रिका प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हार्दिक बधाई प्रेषित करती हूँ।

सुजाता

**(सुजाता प्रियदर्शिनी)**

सत्यमेव जयते

आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अपील आयुक्तालय, जोधपुर

# संदेश

यह बहुत ही प्रसन्नता की बात है कि केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-ज़ोन, जयपुर द्वारा राजभाषा की विभागीय पत्रिका 'राजप्रभा' के 31वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा। केन्द्र सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु कई प्रोत्साहन योजनाएं एवं गतिविधियों का संचालन किया जाता है और इस कड़ी में हिंदी पत्रिकाएँ भी अहम भूमिका निभाती हैं।

यह अत्यंत हर्ष की बात है कि आज न केवल कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग में वृद्धि हुई है बल्कि सार्वजनिक जीवन में अंतरराष्ट्रीय मंच पर भी हिन्दी का प्रभुत्व बढ़ा है।

मैं पत्रिका के प्रकाशन के लिए इससे जुड़े सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ तथा इसकी सफलता की कामना करता हूँ।

**(सुरेश चंद मुकेरिया)**

सत्यमेव जयते

संयुक्त आयुक्त
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय,
जयपुर

# प्रबंध संपादक की कलम से

विभागीय हिंदी पत्रिका 'राजप्रभा' के इस अंक के साथ बतौर प्रबंध संपादक पहली बार आप सभी से संवाद स्थापित करते हुए मुझे अपार हर्ष और गर्व की अनुभूति हो रही है। हिंदी भाषा के प्रति विभाग की प्रतिबद्धता एवं रचनात्मक प्रतिभाओं को प्रोत्साहन देने की यह परंपरा वास्तव में प्रशंसनीय है, और इसका हिस्सा बनना मेरे लिए सौभाग्य की बात है।

विभागीय पत्रिकाएं न केवल हमारे विभागीय कर्मियों की सृजनात्मक क्षमताओं को मंच प्रदान करती हैं , बल्कि यह एक ऐसा दर्पण हैं जिसमें हमारी सांस्कृतिक चेतना, सामाजिक सरोकार और मानवीय भावनाएँ प्रतिबिंबित होती हैं। इस अंक में समाहित विविध रचनाएँ – कविताएँ, लेख, संस्मरण और विचार – हमारी साझा सोच का प्रतिबिंब हैं।

बतौर प्रबंध संपादक,यह मेरा प्रथम प्रयास है, जिसे मैंने संपादकीय टीम और सभी सहयोगियों के सतत समर्थन से साकार किया है। मैं इस मंच के माध्यम से रचनात्मक ऊर्जा को और अधिक विस्तार देने के लिए प्रतिबद्ध हूँ। 'राजप्रभा' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि हमारे विचारों, अनुभवों और रचनात्मकता का जीवंत दस्तावेज़ है। इस अंक में विविध विषयों पर आधारित कविताएँ, लेख, लघुकथाएँ, संस्मरण और विभागीय गतिविधियों की झलकियाँ समाहित हैं, जो न केवल पठनीय हैं, बल्कि प्रेरणादायक भी हैं।

मैं अपने वरिष्ठ अधिकारियों का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन में हमें निरंतर मार्गदर्शन, प्रोत्साहन और सहयोग प्रदान किया। मैं सभी लेखकों, रचनाकारों और सहयोगियों को तहेदिल से धन्यवाद देती हूँ जिनकी सक्रिय सहभागिता के बिना यह अंक संभव नहीं हो पाता। आपकी रचनात्मक सहभागिता ही हमारी प्रेरणा है।

आशा है कि यह अंक आपको रुचिकर, ज्ञानवर्धक एवं मनोहर लगेगा। आपके सुझाव एवं प्रतिक्रियाएँ सदैव आमंत्रित हैं, जो भविष्य में हमारी पत्रिका को और अधिक उत्कृष्ट बनाने में सहायक होंगी।

आर्निका यादव

**(आर्निका यादव)**

सत्यमेव जयते

सहायक निदेशक (रा. भा.)
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

# संपादक की कलम से

प्रिय साथियों,

'राजप्रभा' का यह अंक आपके कर-कमलों में सौंपते हुए के मैं अत्याधिक गौरवान्वित महसूस कर रहा हूँ। भारत सरकार की राजभाषा नीति का मूल उद्देश्य प्रशासनिक कार्यों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देना है। हिंदी एक ऐसी भाषा है जो करोड़ों भारतीयों की सोच, संवाद और पहचान का माध्यम है तथा जिसके प्रति हमारा न केवल भाषाई दायित्व है, बल्कि सांस्कृतिक उत्तरदायित्व भी है।

'राजप्रभा' पत्रिका राजभाषा, प्रशासन और रचनात्मकता को एक साथ जोड़ती है। इसमें विभागीय अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा लिखित रचनाएँ - चाहे वे लेख हों, कविताएँ, अनुभव हों या विश्लेषण - यह दर्शाती हैं कि हम केवल राजस्व संग्रहण का दायित्व निभाने तक ही सीमित नहीं हैं, बल्कि विचारशील, संवेदनशील और सृजनशील भी हैं।

इस पत्रिका में हमने आयुक्तालय में आयोजित-योग दिवस, स्वतंत्रता दिवस समारोह, राजभाषा पखवाड़ा आदि के साथ-साथ अन्य गतिविधियों की चित्रमयी झलकियों को भी समाहित किया है। पत्रिका की मौलिकता का ध्यान रखते हुए इसमें यथासंभव मूल रचनाओं को ही प्राथमिकता देने की कोशिश की गई है । इसके अतिरिक्त पत्रिका के 'क' क्षेत्र से प्रकाशित होने के कारण इसमें केवल हिंदी रचनाओं को ही शामिल किया गया है।

मैं मुख्य आयुक्त महोदय श्री अनुज गोगिया ,प्रधान आयुक्त महोदय श्री गौरव कुमार एवं सुश्री आर्निका यादव,संयुक्त आयुक्त एवं सभी वरिष्ठ अधिकारियों का साधुवाद करता हूँ जिनके कुशल मार्गदर्शन एवं दूरदर्शी सोच के कारण ही यह पत्रिका न केवल समय पर प्रकाशित हो सकी है, बल्कि इसकी गुणवत्ता और प्रस्तुति में भी निखार आया है। साथ ही मैं सभी रचनाकारों तथा उनके परिजनों का भी तहेदिल से धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने पत्रिका हेतु रचनाएँ भेजकर पत्रिका प्रकाशन को सफल बनाया।

राजप्रभा पत्रिका कार्यालय परिवार की अपनी पत्रिका है। अत: प्रकाशित अंक पर आप सभी पाठकों की विचारणीय राय एवं सुझावों के लिए प्रतीक्षारत रहेंगे ।

**(बाबूलाल मीना)**

# स्त्रियों की मौन पुकार : पौराणिक कथाओं से आज की औरत तक

## इतिहास की स्त्रियों में छिपे आज की औरत के प्रश्न

**देवेश शर्मा**, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर

हमारी परंपरा में महाकाव्य केवल कहानियाँ नहीं हैं, वे हमारी संस्कृति की धड़कन हैं। लेकिन अक्सर इन कहानियों में स्त्री पात्र सिर्फ़ परीक्षा देने वाली, त्याग करने वाली या पुरुष नायकों की कथा को महान बनाने वाली छवियों तक सीमित कर दी गई। असल में अगर हम इन स्त्रियों को देवी नहीं, बल्कि इंसान की तरह देखें – तो हमें उनकी चुप्पी, उनके आँसू, उनका क्रोध और उनके प्रश्न कहीं अधिक वास्तविक लगते हैं। और यही प्रश्न आज की औरत के प्रश्नों से मिलते-जुलते हैं। इसे हम कुछ पात्रों के जरिए समझते हैं, जिनका उल्लेख हमें रामायण और महाभारत में मिलता है।

### सीता – मौन में गूंजता प्रतिरोध

सीता की सबसे बड़ी त्रासदी यही रही कि उनका जीवन लगातार परीक्षा से भरा रहा। पहले अग्निपरीक्षा, फिर राजसभा में उनकी पवित्रता पर सवाल और अंत में गर्भवती होते हुए भी वनवास। पर सोचने वाली बात यह है कि सीता ने कभी विद्रोह का शोर नहीं किया, उन्होंने समाज की लाठी खाकर भी मौन चुना।

पर क्या यह मौन उनकी कमज़ोरी थी? नहीं। यह मौन एक तरह का प्रतिरोध था। सीता ने यह साबित किया कि अगर तुम मुझे स्वीकारने में हिचको, तो मैं अपने बच्चों के साथ अपनी दुनिया खुद बना लूँगी। यही कारण है कि उन्होंने लव-कुश को अकेले पाला और एक माँ के रूप में समाज से कहीं बड़ा योगदान दिया।

आज की स्त्री जब समाज, रिश्तेदारों या दफ़्तर की तंग नज़रों से गुज़रती है, तो सीता का यह मौन याद आता है। कभी-कभी चुप रहकर आगे बढ़ जाना ही सबसे बड़ा जवाब होता है।

### द्रौपदी – गुस्से का न्याय

अगर सीता मौन थीं, तो द्रौपदी गुस्से की ज्वाला थीं। महाभारत की सबसे तीखी आवाज़ वही थीं। सोचिए, एक स्त्री जिसे पाँच पतियों ने जुएँ में दाँव पर लगा दिया और सभा में उसका चीरहरण हुआ – उसने कैसे उसी सभा में सवालों की बौछार की!

द्रौपदी की चीख उस समय सिर्फ़ उनकी नहीं थी, वह हर औरत की आवाज़ थी जो अपमान सहते-सहते एक दिन विद्रोह में बदल जाती है। उन्होंने यथास्थिति को स्वीकार नहीं किया, बल्कि कौरवों की सत्ता को चुनौती दी।

आज की स्त्री, जो कार्यस्थल पर उत्पीड़न झेलती है, या घर के भीतर अपमानित होती है-उसके भीतर भी वही द्रौपदी है। समाज को यह समझना होगा कि स्त्री का मौन जब टूटता है, तो वह विद्रोह बन जाता है, और उस विद्रोह की गूंज पीढ़ियों तक सुनाई देती है।

### गांधारी – पट्टी का विरोधाभास

गांधारी ने अपने पति धृतराष्ट्र के अंधे होने पर खुद भी आँखों पर पट्टी बाँध ली। पारंपरिक कथा इसे पति के प्रति समर्पण मानती है, पर गहराई से सोचें तो यह कहीं न कहीं विद्रोह भी था।

गांधारी शायद कहना चाहती थीं – अगर इस घर में औरत की दृष्टि की कोई कीमत नहीं, तो मैं भी अंधी ही सही। यह पट्टी उनकी चुप्पी और विरोध का मिला-जुला प्रतीक है।

आज की औरत भी कई बार खुद को दबा लेती है, समझौते करती है, आँखों पर सामाजिक पट्टियाँ बाँध लेती है। लेकिन कहीं भीतर उसका मन चीखता है-काश मुझे देखने, बोलने और फैसले लेने की आज़ादी होती। गांधारी हमें यह सिखाती हैं कि समझौते के पीछे भी कहीं न कहीं एक मौन आक्रोश पलता है।

### मंदोदरी – त्रासदी में धैर्य

लंकापति रावण की पत्नी मंदोदरी को अक्सर भुला दिया जाता है। पर वे बेहद मज़बूत स्त्री थीं। उन्होंने रावण को

बार-बार समझाया कि सीता को लौटा दो, युद्ध मत करो। पर उनकी आवाज़ अनसुनी रही। अंततः उन्होंने अपने पति, अपने पुत्र और अपनी पूरी नगरी को खो दिया।

मंदोदरी का दुख यह था कि सही जानने के बावजूद, उनकी सलाह को कभी महत्व नहीं मिला। यह दुख आज भी लाखों स्त्रियों का है, जो परिवार और समाज को सही रास्ता दिखाना चाहती हैं, पर उनकी बात को औरत का मत कहकर टाल दिया जाता है।

आज जब घरों में महिलाएँ आर्थिक फैसले, बच्चों की पढ़ाई या नौकरी से जुड़ी सलाह देती हैं - तो मंदोदरी याद आती हैं। हमें यह स्वीकार करना होगा कि स्त्री की चेतावनी को अनसुना करना, समाज को विनाश की ओर धकेलना है।

### कुंती – दुविधा की माँ

कुंती का जीवन दुविधाओं से भरा था। विवाह से पहले ही पुत्र की माँ बनने का रहस्य, पाँचों पांडवों की माँ होने की ज़िम्मेदारी और युद्ध में अपने ही पुत्र कर्ण का वध - उनके लिए यह सब असहनीय पीड़ा थी।

कुंती ने हमेशा अपने कर्तव्य और निजी भावनाओं के बीच संघर्ष किया। उन्होंने समाज के डर से कर्ण को त्याग दिया और जीवनभर उस अपराधबोध में जलती रहीं।

आज भी कितनी औरतें अपनी इच्छाओं को, अपने सपनों को समाज की इज़्ज़त के लिए कुर्बान कर देती हैं। कुंती का जीवन यही सवाल पूछता है - क्या समाज की इज़्ज़त औरत के सुख से हमेशा बड़ी होती है?

### अहिल्या – पत्थर बना दी गई औरत

रामायण में अहिल्या की कथा अक्सर सिर्फ़ एक शापित स्त्री की तरह सुनाई जाती है। उन्हें गौतम ऋषि ने पत्थर बना दिया क्योंकि इन्द्र ने छल कर उनका शील भंग किया। पर सवाल यह है- असली अपराधी कौन था? इन्द्र, जिसने छल किया? या अहिल्या, जिन पर श्राप गिरा?

अहिल्या की कहानी हमें बताती है कि पितृसत्ता ने हमेशा स्त्री के शरीर को दोष का केंद्र बना दिया। पीड़िता ही दोषी ठहराई गई। यह अन्याय आज भी दिखता है, जब किसी औरत पर अत्याचार होता है और समाज सबसे पहले उससे पूछता है-तुमने ऐसा क्या किया कि यह हुआ?

राम द्वारा उन्हें मुक्त किया जाना सुंदर प्रतीक है, पर मूल प्रश्न यही है कि स्त्री को समाज क्यों पत्थर बना देता है? क्यों उसे अपनी पीड़ा कहने का अधिकार तक नहीं मिलता?

आज जब हम 'विक्टिम ब्लेमिंग' (Victim Blaming) देखते हैं, तो अहिल्या की कहानी का सच और भी प्रासंगिक हो जाता है।

### उलूपी – इच्छा की स्वतंत्रता

महाभारत की एक कम चर्चित पात्र हैं- उलूपी, जो नागकन्या थीं। उन्होंने अर्जुन को अपने पास खींचा और उनके साथ संबंध बनाए। पर उनकी कहानी में एक बेहद साहसिक पक्ष है - इच्छा का अधिकार।

पौराणिक कथाओं में स्त्रियों को अक्सर पुरुषों की इच्छा के अनुसार चलना पड़ता है। पर उलूपी ने अपनी इच्छा को छुपाया नहीं। उन्होंने अर्जुन को चाहा और उसके लिए कदम उठाया।

अगर इसे आज की दृष्टि से देखें, तो उलूपी उन स्त्रियों की प्रतिनिधि हैं जो अपने सपनों, इच्छाओं और प्रेम के अधिकार को दबाकर नहीं रखतीं। आज भी जब कोई औरत अपनी चॉइस के बारे में खुलकर बोलती है, तो समाज उसे कठघरे में खड़ा कर देता है। उलूपी हमें सिखाती हैं कि औरत की इच्छा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी पुरुष की।

### इतिहास की इन स्त्रियों से आज की औरत का रिश्ता

इन कथाओं को हम अगर सतही ढंग से पढ़ते हैं, तो वे सिर्फ़ पौराणिक प्रसंग लगती हैं। पर जब इन्हें स्त्री के नज़रिए से देखें, तो लगता है कि ये कहानियाँ किसी पुरानी किताब/ग्रंथ की नहीं, बल्कि आज की अख़बार की हेडलाइन की तरह हैं।

- सीता की चुप्पी आज उस औरत की चुप्पी है, जो बार-बार अपने चरित्र पर सवाल सुनती है।
- द्रौपदी का गुस्सा आज उस महिला की चीख है, जो कार्यस्थल पर उत्पीड़न के ख़िलाफ़ आवाज़ उठाती है।
- गांधारी की पट्टी आज उस स्त्री की स्थिति है, जो परिवार के लिए अपनी दृष्टि और सपनों को बाँध देती है।

- मंदोदरी का धैर्य आज उस पत्नी की वेदना है, जिसकी सलाह घर में अनसुनी रह जाती है।
- कुंती की दुविधा आज उस माँ का अपराधबोध है, जो समाज की नज़रों के डर से अपनी इच्छाएँ दबा देती है।
- अहिल्या का पत्थर बनना आज उस औरत का प्रतीक है, जिसे अत्याचार झेलने के बाद भी दोषी ठहरा दिया जाता है।
- उलूपी की इच्छा आज उस स्त्री का साहस है, जो अपने प्रेम या करियर की राह खुद चुनना चाहती है।

### देवी नहीं, इंसान मानना होगा

हमारे समाज की सबसे बड़ी समस्या यही है कि इन स्त्रियों को हमने या तो देवी बना दिया या दोषिनी। पर असलियत में वे न तो सिर्फ़ देवी थीं और न ही केवल दोषिनी – वे इंसान थीं, जिनके अपने सवाल, दुख, सपने और संघर्ष थे।

आज ज़रूरत इस बात की है कि हम इन कहानियों को मॉरल लेक्चर की तरह नहीं, बल्कि मानवीय अनुभव की तरह पढ़ें।

- हमें सीता की चुप्पी में प्रतिरोध देखना होगा।
- द्रौपदी के गुस्से में न्याय की खोज।
- गांधारी की पट्टी में मौन विरोध।
- मंदोदरी की सलाह में बुद्धिमत्ता।
- कुंती की दुविधा में औरत की पीड़ा।
- अहिल्या की चुप्पी में समाज की बेरहमी।
- उलूपी की हिम्मत में आज़ादी की पुकार।

और यही असली सीख है– इतिहास की औरतें हमें यह बताती हैं कि स्त्री चाहे मौन हो, विद्रोही हो, धैर्यवान हो या दुविधाग्रस्त – वह हर हाल में इंसान है। और इंसान के रूप में उसकी गरिमा, उसकी आवाज़ और उसकी इच्छाएँ उतनी ही अहम हैं जितनी किसी पुरुष की।

आज की औरत जब समाज में अपने हिस्से की जगह तलाशती है, तो यह सभी कहानियाँ उसका आईना बन जाती हैं।

असली सवाल यह है – क्या हम आज भी इन स्त्रियों को केवल देवी मानकर पूजेंगे, या इंसान मानकर समझेंगे?

क्योंकि अगर हम उन्हें इंसान मानेंगे, तभी उनकी पीड़ा, उनके प्रश्न और उनके संघर्ष हमें कुछ सिखा पाएँगे।

और शायद तभी हम एक ऐसे समाज की ओर बढ़ेंगे जहाँ स्त्री की आवाज़, चाहे मौन हो या विद्रोह – सुनी भी जाए और समझी भी जाए।

आमेर किला, जयपुर

# हास्य-विनोद (Sense of Humour)

**आर. के. चंदन,** आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मु. जयपुर

जीवन एक रूपी हो ही नहीं सकता। जब तक विविध रंगों से यह भरपूर नहीं हो, तो जीवन स्वयं उदासीन व बोझ बन कर रह जाएगा। इन विविध रंग- रसों में हास्य विनोद का स्थान निराला तो है ही, अत्यंत आवश्यक भी है क्योंकि हास्य विनोद द्वारा किसी भी नीरस, निराश, बोझल, कटु आदि परिस्थिति को सरस-सफल अवसर में बदला जा सकता है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ, आप स्वयं देखिये :

1. द्वितीय विश्व-युद्ध के दौरान लन्दन स्क्वायर में एक उत्तेजित अंग्रेज तत्कालीन ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल की घोर आलोचना करते हुए उन्हें सनकी, नासमझ, अव्वल दर्ज़े का मूर्ख इत्यादि कह रहा था। पुलिस ने उस व्यक्ति को हवालात में डाल दिया।

   अगले दिन ब्रिटिश संसद में यह मामला विपक्ष ने जोर-शोर से उठाया और गिरफ्तारी की घटना को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हनन, सरकार की तानाशाही, लोकतंत्र की हत्या आदि बताया व संसद का काम-काज ठप्प हो गया।

   यहाँ चर्चिल की विनोद कला (Sense of Humour) ने पूरे माहौल को बदल दिया। उन्होंने कहा गिरफ्तारी का कारण मेरी आलोचना नहीं है, बल्कि युद्ध के समय यदि कोई व्यक्ति इतनी गोपनीय और सामरिक महत्व की सूचनाओं को लीक करता है तो पुलिस को गिरफ्तार करना ही पड़ेगा। पूरे संसद का तनावपूर्ण माहौल हँसी के ठहाकों में बदल गया।

2. रुडयार्ड किपलिंग, जंगल बुक के लेखक, एक संकरे रास्ते से जा रहे थे। सामने एक घमंडी व्यक्ति आ रहा था। उसने किपलिंग को अपमानित करने की मंशा से गुर्राते हुए कहा कि, मैं मूर्खों को रास्ता नहीं देता। पास के लोगों ने सोचा कि माहौल तनाव ग्रस्त हो सकता है क्योंकि रुडयार्ड किपलिंग जैसे विद्वान से कोई ऐसी बात कैसे कर सकता है। लेकिन किपलिंग ने हाज़िरजवाबी का परिचय देते हुए उसे रास्ता दे कर कहा श्रीमान, मैं तो उन्हें तुरंत रास्ता दे देता हूँ। लोग घमंडी व्यक्ति पर हँसते हुए व किपलिंग साहब के Sense of Humour की सराहना करते हुए विदा हुए।

3. बेंजामिन डिजराइली 19वीं सदी के उत्तरार्ध में ब्रिटिश प्रधानमंत्री थे। एक दिन संसद में बहस के दौरान एक सांसद ने उनको नीचा दिखाने और अपमानित करने के ध्येय से कहा कि मैं कई वर्षों से आपको जानता हूँ। लोग कहते हैं कि आप नाली के कीड़े थे, ये तो आपके ससुर थे जिन्होंने आपको यहाँ तक पहुँचा दिया और मैं तब भी यहीं था और अब भी यहीं हूँ। पूरी संसद सकते में थी, कोई प्रधानमंत्री का ऐसा अपमान कैसे कर सकता है लेकिन डिजराइली ने संजीदगी के साथ कहा - महोदय आप बिल्कुल ठीक कहते हैं क्योंकि मेरे ससुर ने सोचा कि वह स्थान मेरे लिए उपयुक्त स्थान नहीं था लेकिन बहुत से और ससुर भी यह देखते हैं और मानते हैं कि उनके दामादों के लिए वही जगह उपयुक्त है जहाँ वे पड़े हैं। पूरी संसद ठहाकों से गूंज उठी और अपमान करने की मंशा वाले महोदय को कहीं मुँह छुपाने की जगह भी नहीं मिली।

4. यह विश्व क्रिकेट के महान हरफनमौला खिलाड़ी जैक कालिस से संबंधित एक मशहूर और दिलचस्प किस्सा है, जो 12 मार्च 2006 को जोहान्सबर्ग के वांडरर्स स्टेडियम में ऑस्ट्रेलिया और दक्षिण

अफ्रीका के बीच खेले गए पाँचवें वनडे मैच से जुड़ा हुआ है। इसे आज भी The Greatest One-Day Match Ever Played कहा जाता है।

इस मैच में ऑस्ट्रेलिया ने पहले बल्लेबाज़ी करते हुए वनडे इतिहास का सबसे बड़ा स्कोर खड़ा किया – 434 रन (4 विकेट पर)। रिकी पोंटिंग ने 164 रन की धुआंधार पारी खेली थी। यह पहली बार था जब किसी टीम ने वनडे में 400 का आंकड़ा पार किया था। इंटरवल में जब दक्षिण अफ्रीकी खिलाड़ी ड्रेसिंग रूम में लौटे, तो माहौल बहुत भारी और निराशाजनक था। इतने बड़े लक्ष्य को देखकर ज़्यादातर खिलाड़ियों के चेहरे उतर गए थे, और यह स्वाभाविक भी था। तभी मैदान में कुछ ऐसा हुआ जिसने टीम का मूड पूरी तरह बदल दिया। जैसे ही खिलाड़ी ड्रेसिंग रूम में पहुँचे और बैठकर सोचने लगे कि अब इस मैच में क्या किया जा सकता है, जैक कालिस, जो आम तौर पर शांत और गंभीर स्वभाव के माने जाते हैं, उन्होंने माहौल हल्का करने के लिए मज़ाक में कहा:

Boys don't worry Bowlers have done their job, we stopped Australia 15 runs short, batsman should achieve the target well.

(दोस्तों, चिंता मत करो... गेंदबाज़ों ने अपना काम कर दिया है, ऑस्ट्रेलिया ने 15 रन कम बनाए हैं, हम आसानी से इसे चेज़ कर सकते हैं!)

यह बात उन्होंने इतनी बेपरवाही और मज़ाकिया अंदाज़ में कही कि पूरा ड्रेसिंग रूम ठहाकों से गूंज उठा। सबके चेहरे खिल गए। जो खिलाड़ी तनाव में थे, वो मुस्कुरा दिए। उनके इस एक मजाक ने ड्रेसिंग रूम का सारा दबाव हटा दिया, खिलाड़ियों को फिर से विश्वास दिलाया कि यह नामुमकिन नहीं है। और यही टीम की मानसिकता को बदलने वाला पल था। और फिर क्या हुआ?

दक्षिण अफ्रीका ने उस दिन 438 रन बना कर 1 गेंद शेष रहते हुए जीत दर्ज कर ली, जो उस समय का सर्वाधिक रन चेज़ था। हर्शल गिब्स ने 175 रन की शानदार पारी खेली और कप्तान ग्रेम स्मिथ ने भी 90 रन बनाए। मैच का अंतिम रन मार्क बाउचर ने मारा और जोहान्सबर्ग का स्टेडियम खुशी से झूम उठा।

इस किस्से से एक बात स्पष्ट होती है – हास्य बोध वास्तव में कठिन समय या लक्ष्य आदि को किस तरह आसान व साध्य बना देता है। एक मुस्कान पूरी टीम की सोच को बदल सकती है। जैक कालिस का वो एक संवाद, जो हास्य बोध से ओत-प्रोत था, आज इतिहास का हिस्सा बन चुका है।

**हिन्दी केवल भाषा नहीं,**
**यह भारतीय जन-जन के**
**हृदय की आवाज़ है।**

**– काका कालेलकर**

# उम्र आराम करने की

**शालिनी वर्मा**, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर संभाग, सीतापुरा, जयपुर

सेवानिवृत्ति का समय धीरे धीरे आ रहा है करीब,
हिदायतें मिलने लगी हैं बच्चों और परिजनों से
जैसे अब ठहराव दो गति को,
संभल कर वाहन चलाओ, सेहत पर ध्यान दो,
रूटीन मेडिकल टेस्ट कराओ।
बिटिया कहती है – मां अब अपने मन का करो,
बहुत मेहनत की है आपने हमें बड़ा करने में,
अब समय है आपके आराम करने
और अपने शौक पूरे करने का
छोड़ो अब नौकरी का झंझट, ले लो वी आर एस!
बात तो उसकी लगती है सोलह आने सही ,
दिल मान भी लेता है पर दिमाग नहीं स्वीकारता!
ब्रेन न्यूरॉन्स और अनुवांशिकी है अपनी भूमिका निभाता,
जीवन की आपाधापी अब बन गई है जरूरी हिस्सा,
कैसे दे दूँ अपनी गति को ब्रेक?

आदत में शुमार है अपने काम की फेहरिस्त बना ,
उन्हें निपटाने की योजना बनाना,
फिर शाम, कभी देर रात तक, जल्दी जल्दी निपटा,
संतोष भरी नींद लेना।
कैसे बदल दूँ जीवन का रूटीन,
बिना किसी लक्ष्य के कितना खाली होता है दिन?
अपने छोटे–छोटे शौक तो मैं यूँ भी
समय चुराकर पूरे करती रही हूँ।
फिर क्या उन वर्षों पुरानी हॉबीज को
बँधी पुरानी लुप्तप्राय गठरी से
निकाल जीवित करना आसान है?
वर्तमान परिस्थितियों और उम्र के इस पड़ाव पर
क्या पहले जैसा आनंद पा लूंगी उन
भूली बिसरी तमन्नाओं से?
फिर शौक और मौज तो कुछ समय
के लिए ही देते हैं तृप्ति!

घर–ऑफिस संभालते हुए
नदिया की धारा की तरह
अविरल निर्बाध बहता रहा जीवन,
कहीं ठहरने पर नाले में न हो जाये परिवर्तित!
क्या दौड़ती भागती जीवनशैली
का थमना कुछ ऐसा न होगा,
जैसे, घर में पड़ी कुछ पुरानी मशीन या
उसके कल पुर्ज़े पड़े– पड़े खा जाते हैं जंग ,
और किसी काम के नहीं रहते।
बिक जाते हैं कबाड़ी के हाथ, स्क्रैप होने के लिए।
जैसे, पहने हुए जूते चप्पल यदि छोड़ दो पहनना,
फिर पहनने के काबिल नहीं रहते और
कुछ समय बाद लेते हैं शरण डस्टबिन की।

ऐसा हश्र डराने लगता है!

फिर सेवानिवृत्ति के बाद क्या करोगी?
जब इस यक्ष प्रश्न के उत्तर के लिए टटोला मैने मन,
मुस्कुरा कर बोला वो– खाली दिमाग शैतान का घर!
मानसिक अवसाद नामक भूत कब डेरा डाल ले क्या पता?
इसलिए रुकना नहीं है बस दिशा बदलनी है–कार्यक्षेत्र की।
ऐसा कुछ जो सार्थक कर दे जीना जैसे–
इस समाज को बेहतर करने का प्रयास!
बहुत कुछ पाया है इस धरती से, इस समाज से
लौटाने का सही समय आ गया है!
यही ध्येय तो संजो रखा भी था सदैव,
दिल के किसी कोने में।

अब जीवन संध्या में अपने जीने का मकसद,
और सतत चलते रहने का समीकरण
दे गया सभी प्रश्नों के उत्तर।
इच्छा है कभी न आए उम्र आराम करने की!

# सशर्त

**विवेक श्रीवास्तव,** सहायक आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मु. जयपुर

तेरा फोन मुझे दे दे,

मेरा फ़ोन ठीक नहीं चल रहा तेरा तो काम चल जाएगा, सामने वाली भाभी जी या डॉक्टर मैडम जी के फ़ोन से मुझे मिस्ड कॉल कर देना।

आप सही करवा लो ना मुझे भी दिक्कत हो जाएगी। किश्तों पर नया ले लो।

मुझे देर हो रही है सेठ जी नाराज़ हो जाएंगे, बाद में देखते हैं, तेरे को इतनी ज़रूरत नहीं है सारा बैलेंस ख़ुद की माँ से बात करने में ख़त्म कर देती है, दिन भर व्हाट्सएप चलाने के अलावा क्या करती है ? तेरी स्कूटी ले जा रहा हूँ, देर हो गई बहस में। तू पैदल चली जाना, कैलाश ने झुंझलाते हुए लक्ष्मी को कहा और उसका फ़ोन लेकर तेज़ी से चला गया।

लक्ष्मी उदास हो गई पर कुछ कह नहीं सकी कैलाश का गुस्सा तेज़ है और वो जाते समय उससे कोई बहस नहीं करती। रोज़ की ही बात है उसकी और उसके काम की कोई अहमियत उसकी नज़रों में है ही नहीं जबकि घर दोनों की तनख़्वाह से चलता है। स्कूटी भी उसने अपनी नौकरी के बल पर किश्तों पर ली है, सुबह बच्चियों को स्कूल भी छोड़ आती है, कैलाश तो कभी जल्दी उठता ही नहीं वो तीन घरों में खाना बनाती है, कभी देर हो जाए तो उसे ही बातें सुननी पड़ती हैं ।

तू फ़ोन नहीं कर सकती थी ? तेरे देर से आने के कारण मुझे देर हो जाती है। वरदा ने लक्ष्मी को डाँटा ।

फ़ोन उन्होंने ले लिया है वो बाहर गए हैं, बच्ची बीमार हो रही है, मुझे छोड़ती ही नहीं है, फ़ोन है ही नहीं मेरे पास, कैसे करती? उन्हें देर हो रही थी इसलिये स्कूटी भी ले गये।

क्यों तेरी नौकरी नौकरी नहीं है क्या ? तू भी तो बराबर का कमाती है, मोबाइल बिना कहीं काम चलता है क्या आज कल ?

मोबाइल ख़रीद। नहीं तो काम छोड़ दे, मैं दूसरी बाई रख लूँगी ।

मैडम कमाते तो हम दोनों बराबर ही हैं पर आदमी की नौकरी की ज़रूरत ज़्यादा बड़ी होती है, मेरा तो काम चल जाता है। औरत की नौकरी की कोई क़दर नहीं है। घर तो उसी से चलता है, आदमी घर में बैठा अच्छा नहीं लगता औरत तो उससे कम कमाती ही निभ पाती है। रुँधे गले से लक्ष्मी ने जवाब दिया।

कोई किसी को खिलाता तो नहीं पर बातें सब बनाते हैं। चार पैसे कमा लेती हूँ तो सबको लगता है मुझे घमंड हो गया है इसलिए सबसे दब के ही रहना पड़ता है , मेरे पीहर में तो किसी ने कभी ये काम किया ही नहीं ।

हाय स्मिता, कैसे याद किया ?

अरे यार मेरे अस्पताल की गायनेकोलॉजिस्ट मैटरनिटी लीव पर जा रही है, तू थोड़े समय जॉइन कर ले ।

अरे यार कहाँ जॉइन कर पाऊँगी मैं तेरा अस्पताल, दोनों बच्चे छोटे हैं, यहीं घर पर थोड़ी प्रैक्टिस कर लेती हूँ। आस-पास के पेशेंट्स आ जाते हैं। घर सँभला रहता है। 'इनकी' टूरिंग बहुत रहती है।

कमाई ज़्यादा है क्या हा हा...

हाँ कमाई तो बहुत अच्छी है, कोई कमी नहीं है।

पर मैं घर नहीं छोड़ सकती।

कहते हुए मेरा गला भर्रा गया।

सास-ससुर भी बहुत ओल्ड एज में हैं, उन्हें भी अब अकेला नहीं छोड़ सकती।

यार तू गोल्ड मैडलिस्ट है। छोटी-मोटी प्रैक्टिस करके क्यों डिग्री को धूल लगा रही है? मेरा नहीं तो कोई और अच्छा अस्पताल जॉइन कर ले। अस्पताल का एक्सपोज़र तो अस्पताल का ही होता है। तरह-तरह के पेशेंट्स देखने को मिलते

हैं। घर से निकल कर काम कर। इन-लॉज़ और बच्चों के लिए हैल्प रख ले। सीसी टीवी कैमरे से कहीं से भी मॉनिटरिंग हो जाती है।

'ये' नहीं मानेंगे, इन लोगों ने शादी की शर्त ही ये रखी थी कि मैं नौकरी नहीं करूँगी, घर पर ही प्रैक्टिस के लिए माने थे।

शादी भी शर्तों पर होती है क्या यार !

क्या बताऊँ मंगली थी मैं कोई मंगली मैडीको लड़का मिला ही नहीं ।

क्यों प्रकाश से तो तेरी काफ़ी अच्छी दोस्ती थी ?

तू भी कहाँ की बात ले आई मैंने सकुचाते हुए कहा, वो मंगली नहीं था, दोनों के पैरेंट्स माने नहीं।

फिर कोई प्यार जैसा नहीं था, कम्पैटिबिलिटी थी ।

यहाँ मैं ख़ुश हूँ, बस मेरे प्रॉफ़ेशन की कोई वक़त नहीं है।

ये कम है क्या ? ख़ैर जैसी तेरी इच्छा, अगर कुछ विचार बने तो बताना।

तब ही लक्ष्मी बोली

मैडम मोबाइल दे दो, 'इन्हें' मिस्ड कॉल करना है।

लक्ष्मी शायद सही कह रही है, आदमी की नौकरी का ही महत्व होता है, औरत की नौकरी की क़दर नहीं होती।

पर क्यों ?

कभी- कभी कोई बात ऐसी हो जाती है, जो मस्तिष्क के पूरे द्रव को हिला देती है। स्मिता के फ़ोन और लक्ष्मी की कही बात ने पूरी तरह हिला दिया।

क्यों औरत की नौकरी की क़दर नहीं होती, वो चाहे कितना कमाए उसकी नौकरी की स्थिति घर की अर्थव्यवस्था में कुछ योगदान करने वाली चीज़ ही होती है।

मुझे पता है मेरी बेटी कहीं भी सामंजस्य बिठा लेगी, ऐसे संस्कार दिए हैं हमने उसे।

मैडीको से ही क्या फ़र्क पड़ता है ? आदमी की तो कमाई अच्छी होनी चाहिए। ज़रूरी थोड़ी है कि तू अस्पताल में खटती रहे।

राज करना आराम से।

और फिर घर में काम करने को तो वो मना कर भी नहीं रहे।

माँ तुम समझती क्यों नहीं ?

क्या समझना है इसमें, अच्छा लड़का है, जन्म पत्री मिल रही है, परिवार अच्छा है, फिर कब तक तुझे बिठा कर रखेंगे ? 29 साल की तो तू हो गई।

ज़्यादा उम्र होने पर चेहरे की नौन छब चली जाती है।

रोज़ पड़ोसी पूछते हैं, मिसेज़ शर्मा कल ही कह रही थीं कि आप लोगों में तो लड़की को बिठा के रखते हैं, लड़की को भी लड़के के बराबर ही पढ़ाते हैं, सक्सैना साहब की लड़की की शादी भी 32 - 33 साल की उमर में हुई। लड़की घर में बैठी हो तो जाने नींद कैसे आती है !

तुझसे रोज़ पार्वती मंगल का पाठ करवाने के लिए कह रहीं थीं। माँ का गला भर्रा गया।

हे भगवान.....

माँ तुम 30 साल पुरानी घटना को दुहराना चाहती हो ? तुम्हारी कुंठा मुझसे छुपी नहीं है। इतनी पढ़ने लिखने के बाद केवल रोटी बनाने और हमें पालने में लगी रहीं। कितनी नौकरियों के प्रस्ताव ठुकरा दिए, क्या ख़ुश हो तुम ?

वो बात और थी बेटा, संयुक्त परिवार था, बंधन बहुत होते थे पहले, घर में भी सिर पर पल्ला रखना पड़ता था।

लेकिन ये लोग तो तुझे घर में काम तो करने पर सहमत हैं।

माँ हर युग में औरत समझौता ही करती आई है।

फिर भी बेटा तू मिल तो ले प्रशांत से। आज शाम को ही वो आ रहे हैं।

आज ही !!!

...

कोई बात नहीं मैडिको में ही कौनसे लाल लग रहे होते हैं, प्रशांत जी का तो 1 करोड़ साल का पैकेज है, डॉक्टर तो इतना कमाता भी नहीं है। ज़िंदगी भर पढ़ता ही रहता है।

माँ का बड़बोलापन भोलेपन की सारी हदें पार कर जाता है।

हाँ, हमें नौकरी करवाने की ज़रूरत ही नहीं है। घर में एक डॉक्टर होना भी चाहिए। प्रशांत की माँ ने मुस्कुराते हुए एक लिफ़ाफ़ा मुझे पकड़ाते हुए कहा भई हमारी तरफ़ से तो हाँ है।

फिर भी लड़का-लड़की भी एक दूसरे से मिल लें।

प्रशांत के चेहरे पर सौम्य भाव थे, माँ की बात पर बोले कि वैसे मैडिको के लिए नॉन-मैडिको सैकंड चॉइस होता है।

ऐसी बात नहीं है बेटा हमारी बेटी बहुत एडजस्टेबल है, पिताजी ने बात सँभाली। और संबंध तो ऊपरवाला पहले से ही निश्चित कर देता है, हम तो केवल यहाँ उसे ढूँढते हैं, जोड़ियाँ तो भगवान् की बनाई हुई होतीं हैं। वैसे तो हम जन्मपत्री के भी क़ायल नहीं हैं, पर फिर भी कुछ प्रपोज़ल चले और उन्होंने माँगी, तब हमने जन्मपत्री बनवाई तो पता चला कि ये मांगलिक है, इसके लिए मांगलिक लड़का ही होना चाहिए। आप से पत्री भी अच्छी मिल रही है। वैसे राम-सीता की जन्मपत्री तो कितने बड़े पंडितों ने मिलाई होगी, पर दुख तो उन्हें भी झेलना पड़ा।

अगर आप दोनों का संबंध बदा है तो ज़रूर होगा।

जन्मपत्री तो बहुत अच्छी मिली है, प्रशांत के पिताजी ने भी उत्साह से कहा।

---

माँ मुझ पर दबाव मत डालो, मुझे सोचने दो।

तू सोच ले बेटा,

अभी तो वैसे भी श्राद्ध पक्ष आ रहा है, अब तो नवरात्रों के अच्छे दिनों में ही बात आगे बढ़ेगी।

उन लोगों को भी आए हुए हफ़्ता तो हो गया, उनका भी कोई जवाब नहीं आया।

पंडित जी ने ये नग बताया है, कह रहे थे कि तेरा बृहस्पति किलकिला रहा है, 1 महीने में कोई बात बन जाएगी। ले ये पहन ले, कहते हुए माँ ने एक अँगूठी पहना दी।

..

माँ सुबह-सुबह हाँफ़ते हुए बोली अरे सुन, उनकी तरफ़ से हाँ हो गई है। लगता है पंडित जी का रतन काम कर गया, भगवान् का शुक्र है, तेरे पापा ने नवरात्र विश करने के बहाने फ़ोन किया था।

अब तू भी हाँ कर दे बेटा, तो हम भी निवृत्त हों।

ठीक है, जैसा आप उचित समझें।

.....

10 साल की यात्रा 10 मिनट में दिमाग़ में पूरी हो गई।

प्रशांत का फ़ोन था, कैसी हो ? घर पर सब कैसे हैं ? बच्चे ठीक हैं ? मम्मी पापा की तबीयत कैसी है ?

तुमने इतना अच्छे से घर सँभाल रखा है, इसीलिए मैं निश्चिंतता से सब कर पाता हूँ। हमेशा की तरह मेरे जवाब की प्रतीक्षा किये बिना बोले। मैं अगले शनिवार को आ जाऊँगा।

ऐसा लगता है, जैसे प्रशांत ज़्यादा-से ज़्यादा कमाने की कोशिश सी करते हैं, अपने को मैडीको से बेहतर कमाई वाला सिद्ध करने के लिए।

उन्हे बता दूँ कि स्मिता का फ़ोन आया था ?

पर.. कहीं ये विश्वासघात तो नहीं होगा ?

इस सबमें किसका दोष था ? शायद किसी का नहीं।

लगता था सब ख़ुश तो हैं, पर सबकी ख़ुशी सशर्त है, कृत्रिम सी है, कोई भी शर्त टूटी, तो सब कुछ ढह जायेगा।

**हिन्दी भाषा का महत्व**
**उसकी सामाजिक, सांस्कृतिक**
**और राष्ट्रीय एकता में है।**

# जो है, सो है

**राजेश परनामी,** सहायक आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मु. जयपुर

चुनौतियाँ जब लगें अपार
ना जुड़ते हों स्वरों के तार
खुशियाँ लगें माँगी सी उधार
अंदर हो यदि युगों का भार।

खुद को बोल दिया करो
जो है, सो है।
विश्वास करो
कदम स्वयं चल पड़ेंगे।

आँख जब हो नम
शहर की हवा में लगे गम
ऐसा लगे कि क्यों मिला
मुझे दूसरे से कम

खुद को बोल दिया करो
जो है, सो है।
विश्वास करो
कदम स्वयं चल पड़ेंगे।

रोशनी जब लगे मध्यम
थकान भरे हों कदम
ढूँढो ज़ख्मों की मरहम
लगे अपनी जगह कम।

खुद को बोल दिया करो
जो है, सो है।
विश्वास करो
कदम स्वयं चल पड़ेंगे।

रास्ते जब दिखें अन्जान
ना हो तुम्हारी कोई पहचान
जीवन लगे जब वीराना
ना मिलता हो कोई ठिकाना

खुद को बोल दिया करो
जो है, सो है।
विश्वास करो
कदम स्वयं चल पड़ेंगे।

सफर जब लगे तुम्हें अधूरा
समेटे टूटे स्वप्नों का चूरा
ना आये बस में मन का जमूरा
कहे हर पल क्यों मैं पूरा-सूरा

खुद को बोल दिया करो
जो है, सो है।
विश्वास करो
कदम स्वयं चल पड़ेंगे।

व्यथा जब खींचे लकीर
शब्द लगायें मन में तीर
हर क्षण रहे मन अधीर
ना रूकें तुमसे अपने नीर।

खुद को बोल दिया करो
जो है, सो है।
विश्वास करो
कदम स्वयं चल पड़ेंगे।

# राजभाषा समारोह – 2024 की झलकियाँ

# राजभाषा समारोह – 2024 की झलकियाँ

# राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वर्ष 2024–25 के दौरान हिन्दी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु प्रदत्त पुरस्कार

केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर संभाग एम. आई. रोड, जयपुर को प्रदत्त राजभाषा शील्ड व प्रमाण पत्र ग्रहण करते हुए श्री जे. आर. ढाका, सहायक आयुक्त

सीमा शुल्क संभाग, बीकानेर को प्रदत्त राजभाषा शील्ड व प्रमाण पत्र ग्रहण करते हुए श्री वरूण तंवर, अधीक्षक

# केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर द्वारा प्रदत्त हिंदी डिक्टेशन/टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना वर्ष 2024–25 हेतु प्रमाण पत्र वितरण

# केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जयपुर द्वारा प्रदत्त हिंदी डिक्टेशन/टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना वर्ष 2024–25 हेतु प्रमाण पत्र वितरण

# सीमा शुल्क आयुक्तालय, जयपुर द्वारा प्रदत्त हिंदी डिक्टेशन/टिप्पण एवं आलेखन प्रोत्साहन पुरस्कार योजना वर्ष 2024–25 हेतु प्रमाण पत्र वितरण

# नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (का.–1) जयपुर द्वारा प्रदत्त पुरस्कार

हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु ''क'' वर्ग में
तृतीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्री नीरज दुबे,अपर आयुक्त,
सीमा शुल्क (निवारक) जोधपुर, मुं. जयपुर

हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु ''क'' वर्ग में
द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्री ऋषि यादव, अपर आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय,
जयपुर

हिंदी में सर्वश्रेष्ठ कार्य करने हेतु ''ख'' वर्ग में
तृतीय पुरस्कार प्राप्त करते हुए
श्री जे. सी. जीनगर, सहायक आयुक्त,
केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण
आयुक्तालय,
जयपुर

# स्वाधीनता दिवस समारोह–2025

# भाई या भार

**आर. के. चंदन,** आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), जोधपुर, मु. जयपुर

आचार्य विनोबा भावे एक दिन दोपहर पहाड़ी के नीचे पेड़ की छाया में विचार मग्न बैठे हुए थे। अचानक उनका ध्यान एक छोटी सी लड़की के ऊपर गया जो अपनी ही कद-काठी के लड़के (बालक) को गोद में लिए जा रही थी।

आचार्य ने उसे रोका और पूछा कि कहाँ जा रही हो ? उस लड़की ने पहाड़ी की चोटी पर स्थित छोटे से मकान की तरफ इशारा करते हुए उत्तर दिया कि अपने घर जा रही हूँ।

विनोबा भावे ने उस लड़की की सामर्थ्य, पहाड़ी की दूरी, ऊँचाई तथा गोद में लिए बालक के भार आदि कारकों को ध्यान में रखते हुए कहा कि इतनी दूर कैसे जायेगी और वह भी इस भार के साथ, थक जायेगी। लड़की चली जा रही थी। आचार्य ने उससे आग्रह करते हुए कहा - इस भार को लेकर उतना ऊपर पहाड़ी पर कैसे जायेगी, तू थक जाएगी। लड़की ने जवाब दिया - भार नहीं है यह, भाई है मेरा। आचार्य देखते रहे और वह बालिका उस बालक को गोद में उठाए कदम-कदम उठाते हुए पहाड़ी की चोटी पर अपने घर पहुँच गई। तब आचार्य को अनुभव हुआ कि गोद में भार नहीं भाई था उसका। थकने का तो सवाल ही नहीं था।

उक्त लघु कथा मेरे लिए हमेशा ही प्रेरणादायक रही है। भाई या भार (Brother or Burden) यह जो भाव है, नज़रिया है, काफ़ी महत्वपूर्ण है। जीवन में अगर हम किसी भी कार्य, चुनौती आदि को भाई की तरह लेंगे तो उसमें सफलता मिलना निश्चित है, लेकिन अगर उसे भार समझ लिया जाए तो फिर हार का द्वार ही हमारा स्वागत करेगा।

यही अपनत्व का भाव (Sense of Belongingness), हमें कार्यालय में, घर में, समाज में और सम्पूर्ण जीवन में प्रसन्नतापूर्वक आगे बढ़ायेगा। आचार्य भले ही आश्चर्य करें, हम सफलतापूर्वक मंज़िल प्राप्त कर लेंगे।

**हिन्दी के द्वारा सारे भारत को**
**एक सूत्र में**
**पिरोया जा सकता है।**

**- स्वामी दयानंद सरस्वती**

# स्वविवेक

**आर. के. चंदन,** आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मु. जयपुर

हमारे केंद्रीय उत्पाद शुल्क तथा सेवाकर आदि सभी कानूनी प्रावधानों में हमें कुछ शक्तियाँ दी गई हैं, जिन्हें स्वविवेक से प्रयोग करना होता है। ये अधिकार मूल रूप से फाइन व पेनल्टी की मात्रा के संदर्भ में है। यह गर्व की बात है कि सभी कानून निर्माताओं ने हमारे स्वविवेक पर इतना भरोसा किया है, जितना शायद हम स्वयं भी नहीं कर पाते। लेकिन हमने उन शक्तियों का प्रयोग स्वविवेक नहीं, घमंडतापूर्वक करना शुरू कर दिया है। उसका प्रयोग उपयोग किस तरह से होता है यह विस्तार से बताने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यह लेख एक विभागीय पत्रिका में प्रकाशित होने के लिए लिखा है और विभाग के अधिकारी-कर्मचारी इस पहेली को बखूबी जानते हैं।

फिर भी मुझे इसका वर्णन एक परोक्ष रूप से करने की अनुमति दी जाए। किसी तालुके में एक साहब रहते थे। वर्दी के साथ उनका रूप भी इतना रौबदार था कि अच्छे-अच्छे लोग उन्हें देखते ही सलामी में झुक जायें। मिली हुई सलामी की प्रतिक्रिया कैसी हो, यह साहब के स्वविवेक पर निर्भर करती थी। एक दिन किसी गरीब ने उन्हें देखते ही दूर से झुककर नब्बे प्रतिशत का कोण बनाते हुए सलामी दी।

साहब ने कड़क आवाज में डांट लगायी - इतनी दूर से सलामी ? क्या ज़रुरत थी, सलामी को डाक में भेज देता। बेचारे की शामत तो आनी ही थी। इतनी भयंकर भूल जो कर बैठा। डांट-डपट वगैरह खाने के बाद प्रण लिया कि ऐसी घोर अक्षम्य गलती जीवन में फिर न करेगा।

कुछ दिनों बाद निरीह प्राणी को प्रायश्चित करने का मौक़ा मिल ही गया। साहब बाजार में कहीं दिखाई दे गये। सोचा, कुछ पुण्य कार्य किया होगा जो इतनी जल्दी ही पाप धोने का अवसर मिल गया। इस बार पूरी सावधानी बरती गई। धीरे-धीरे अदब के साथ साहब के नज़दीक आया और निकट पहुँच कर साहब को सलामी दी गई। पर यह क्या, इस बार डांट-डपट कुछ नहीं, सीधे एक थप्पड़ रसीद करते साहब ने फरमाया कि सलामी क्या गोद में बैठ कर देगा, बदतमीज़।

**''जिसकी लाठी उसकी भैंस,**
**यही है उसका स्वविवेक''**

**सौजन्य से - नीरज दुबे, अपर आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), जोधपुर, मु. जयपुर**

# कविताएँ

**तेजराज जीनगर,** अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, संभाग जयपुर ईस्ट, जयपुर

### लेखनी की कीमत

ना कर सके तोप
ना तलवार
वहाँ कर सके
एक कलम
सटीक वार।
चाहे हो सोने की
या मोर पंख,
लेखनी की कीमत है
हज़ार करोड़ शंख।।

### ''हमारी वर्दी''

हमारी वर्दी
भी है
औरों से खास,
अशोक स्तंभ
है बिल्कुल
दिल के पास।
लक्ष्य है,
रेवेन्यू की
हर बूँद को बचाना,
भारत को विकसित राष्ट्र
की पंक्ति में है सजाना।
क्या तीज
त्यौहार या
जन्मदिन,
कर्तव्य पथ पर
हमेशा अडिग
हर पल,
हर दिन।।

### चरखा

गांधी ने चरखे से
हर क्रिया कलाप
से जन मानस
को जोड़ दिया
राष्ट्रवाद को
अभिजात्य वर्ग से
गली/ चौराहे तक
मोड़ दिया
राष्ट्रवाद तो उतरा
आम आदमी गली चौराहे
देश आगे बढ़ता ही गया
ना भटका किसी दोराहे।

### ''दो मुट्ठी बाजरी की कीमत''

यों तो हल्दी घाटी का युद्ध भी मध्यकाल में एक साम्राज्यवाद के विरुद्ध एक अकेली आवाज़ था, लेकिन मैं जिस इलाके से आया हूँ वहाँ की गिरी सुमेल युद्ध भी मातृ भूमि के लिए बलिदान के लिए याद रखा जाता है, वीरों ने सिर कटा दिया, लेकिन युद्ध भूमि नहीं छोड़ी.....

धन्य है गिरी सुमेल
घमसान की धरा,
मातृ भूमि रक्षा के लिए
हर एक जान पर अड़ा।
बलिदान के लिए
सबने दी हाजरी,
शेरशाह सूरी भी
सल्तनत खो देता,
खातिर दो मुट्ठी बाजरी।।

### ''चिनाब'' उन्नत भारत का हस्ताक्षर

भारत ने बनाया सबसे
ऊँचा पुल चिनाब,
एफ़िल टावर भी
अब छोटा लगे जनाब,
मिटा दी है अब सारी
दूरी और गहराई,
कन्याकुमारी से कश्मीर
अब एक लेवल पर आई
कह दो सारे जहाँ को
भारत ने ली है अंगड़ाई,
स्टील के विशाल इरादों से
''आर्च'' ने मानो बाँह फैलाई।

## अखंड भारत

हमने खैबर बोलन दर्रे
क्यों खुले छोड़ रखे?
क्यों नहीं उबला
धार्मिक सुरक्षा का ज्वार??
समाज को वर्णों में
बाँटने की जगह,
मिल कर बना सकते
थे चीन सी दीवार???
यदि होता मानस में
श्रम/ श्रमिक
का उचित वंदन?
इतिहास में ना पाते
स्वजनों का क्रंदन ???
जब तक गण व्यवस्था
रही पर्यंत मौर्य काल,
अखंड भारत
क़ायम रहा हर हाल।
क्यों नहीं समझी
एकता की कीमत?
सिकंदर की भी ना हुई,
भारत में घुसने की हिम्मत???

## डी गुकेश

सारा जग हर्षित हुआ
संग ब्रह्मा विष्णु महेश,
शतरंज की चालों से
जग सिरमौर हुए ''डी गुकेश''।।

## हिन्दी एक अंतरराष्ट्रीय भाषा

वैज्ञानिक भाषा
का पहने ताज,
सबसे ज्यादा
विकसित भाषा
बन विश्व में ,
भर रही नित
ऊंची परवाज,
हिंदी
हमारी भाषा,
क्यों ना करे नाज़।

**सौजन्य से – नीरज दुबे, अपर आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), जोधपुर, मु. जयपुर**

# फ़कीर

**मनोज कुमार मनवानी,** अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, अलवर

किसी गाँव में एक फ़कीर रहा करते थे, अपना दुआओं का झोला लिए फिरते:

**बंदे देता चल सबको दिल से दुआ**
**कर्मों का कर कारोबार भला**
**जो समझे उसका भला**
**न समझे उसका भी भला**

एक दिन गाँव के बाहर पेड़ के नीचे विश्राम कर रहे थे, तभी पता पूछते-पूछते एक दम्पत्ति उनके पास पहुंचे 'बाबा किसी ने बताया है इस गाँव में पीर बाबा की मज़ार है जहाँ चादर चढ़ाने से दुआ कुबूल होती है'।

बहुत साल हुए वो भी अपनी पत्नी के साथ आये थे औलाद की दुआ मांगने, पीर बाबा की अरदास की, दुआ कुबूल हुई उनकी, बच्चे के बचपन के साथ समय पंख लगाकर कब उड़ गया, पता ही न चला। एक दिन पीर बाबा उनके सपने में आए बोले 'तेरी खुशियों का समय पूरा हुआ, तेरा बच्चा स्वयं मैं हूँ खुदा के दरबार से बचपन की खुशियाँ पाने आया एक फरिश्ता, बचपन जाने के बाद इंसान के जीवन में आने वाली ज़िम्मेदारियों, उनके तनाव, व्यवसाय की समस्याएं, रिश्तों के बीच संतुलन, घर गृहस्थी के पचड़े, चाहे अनचाहे वाद-विवाद, हारी बीमारी, अपनों से रखी अपेक्षाओं का टूटना, अधूरी ख्वाहिशों के साथ जीने की मजबूरियाँ, टूटे सपनों का बोझा ढोना ये सब सहन कर पाना किसी फरिश्ते के बस की बात नहीं, इसीलिए जल्दी ही मैं यहाँ से चला जाऊंगा'।

आँख खुली सपना टूटा, कमरे में सन्नाटा था, पत्नी निश्चिंत सो रही थी कमरे में जाकर बच्चे को देखा नींद में चेहरे पर मंद-मंद मुस्कराहट फैली थी। वो सपने को सपना समझ कर भूल जाना चाहते थे, पत्नी को सपने की बात बताकर चिंता और दुःख की अग्नि में नहीं झोंकना चाहते थे, इसीलिए मौन हो गये।

फिर एक दिन सपना सच हो गया, उसी मुस्कान के साथ रात को सोया बच्चा सुबह नहीं उठा उसकी मृत देह जैसे हँस रही थी उन पर, पत्नी पछाड़े खा कर बेहोश हुई जाती थी, एक ओर दिल फटा जा रहा था दूसरी ओर वो अपने ही फरिश्ते के प्रति नफरत और क्रोध की ज्वाला में जल रहे थे। इंसान होने का दर्द उनसे सहन नहीं होता था, फिर भी समय बीतने पर सब कुछ सहते हुए मुस्कराना सीख गए।

पत्नी भी जवान बच्चे के सदमें से बीमारियों की शिकार हो गई, एक दिन बोली 'पीर बाबा की दरगाह पर जाना हैं, पूछना है उनसे, अगर छीनना ही था तो दिया क्यों था संतान का सुख' वो जाना नहीं चाहते थे मगर पत्नी की ज़िद के आगे मजबूर होकर जाने को राज़ी हो गये।

दोनों सुबह जल्दी ही दरगाह पर पहुँच गए, पत्नी मज़ार पर सर पटक पटक कर दुहाई देती थी खुदा की, वो टकटकी लगाए दूर से मज़ार को देखते रहे, तभी किसी ने उनके कंधे पर हाथ रखा, पीछे मुड़कर देखा पीर बाबा उनके बेटे के रूप में हाथ जोड़े खड़े थे बोले माँ को ले जाओ बाबा यहाँ से, मैं उनको दुखी नहीं देख सकता, और कुछ कर भी नहीं सकता, इस मज़ार में ड्यूटी लगी थी लोग दुआएं मांगते, उनकी अर्जी ईश्वर तक पहुँचा देता, फिर अच्छे लोगों की दुआ वो कुबूल कर लेते, और लोग मुझे मानने लग गए, ड्यूटी पूरी हुई तो निश्चिंत मानव जीवन जीने का मन किया। ईश्वर ने मेरी भी अर्जी मंजूर की और तभी आप और माँ दुआ माँगने आए, आपकी भी दुआ कुबूल हुई, 'आपके पास से आने के बाद ईश्वर से पूछा मैंने कि बच्चा खोने की सज़ा आपको क्यों मिली उन्होने समझाया 'मानव होना ईश्वर होने से भी ज़्यादा कठिन है, उनके लिए कुछ पाना और कुछ खोना ही सत्य है, न तो खुशी

सदैव के लिए है न ही दुख स्थायी है, उन्हें हर हाल में जीना होता है और वो भी अपने दुःख और आंसुओं को पीकर मुस्कराते रहना होता है और जो ऐसा कर पाता है उन्हें मैं दुआओं का झोला देता हूँ जिससे वो मुझ तक ज़रूरतमंदों की अर्जियां पहुँचा पाएं और उनके माध्यम से मैं अपने ईश्वर होने को सार्थक कर सकूं' और ये एक झोला आपके लिए दिया है ईश्वर ने, अब से आपसे जो भी अपने मन की पीड़ा व्यक्त करेगा वो अर्जी ईश्वर के सामने होगी और आपकी दुआओं से फलीभूत होगी, लो बाबा, माँ को दुःखमुक्त करों।

निर्विकार भाव से देखते हुए उन्होंने दुआओं का झोला ले लिया और अपनी पत्नी की ओर देखा, झोले में हाथ डालकर आखें बंद कर ली कुछ बुदबुदाए, अगले ही पल उनकी पत्नी अपने बच्चे के साथ खड़ी दिखाई दी उसका हाथ थामे, खुश-बहुत खुश और वो उन दोनों को शून्य में विलीन होने तक देखते रहे।

'बाबा, कहा खो गए, दम्पत्ति ने पूछा पीर बाबा की मज़ार पर अर्जी देनी है संतान प्राप्ति की'

बाबा ने झोले में हाथ डालकर आखें बंद कर ली और दुआ मांगकर मज़ार की राह बता दी।

# इक एकेली बूँद

**ऋतु अग्रवाल**, सेवानिवृत्त अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर,जयपुर ज़ोन, जयपुर

इक एकेली बूँद
जब हिमालय से चली थी
रास्ते में उस जैसी
कई उसको मिली थीं
हिलमिल सब धारा बनी थीं
और पर्वत से बही थी
धारा से धारा मिली झरना बनी
और फिर नदियाँ बनी
नदियाँ बन बहती गई
बहती गई
बहती गई
और सागर से मिली
सोचती हूँ
बूँद वो कितनी निडर थी
कठिन कितनी उसकी डगर थी
क्या हवाओं से
ना लड़ी होगी कभी
क्या तपिश से
ना जली होगी कभी
जो भी हो पर
व्यर्थ इन बातों से
ना डरी होगी कभी
कैसी रही होगी ललक
छोड़कर चलदी फ़लक
पाने को प्रिय की झलक
पर
क्या गुमाँ सागर को है
कैसे इक इक बूँद पहुँची उस तलक

# आशुलिपिक : संवाद और संयोजन का मौन सूत्रधार

**सुशील विश्नोई,** आशुलिपिक, केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

जब भी हम किसी कार्यालय की कार्यप्रणाली की बात करते हैं, तो अधिकतर ध्यान अधिकारियों, निर्णयों और नीतियों की ओर जाता है। परंतु इन सबके बीच एक ऐसा कैडर है, जो न केवल सभी को आपस में जोड़ता है, बल्कि संगठन के सुचारु संचालन में एक मौन किन्तु महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है–वह है आशुलिपिक, जिसे आमतौर पर स्टेनोग्राफर या निजी सहायक कहा जाता है।

मैं स्वयं इस गौरवशाली विभाग में एक आशुलिपिक के पद पर कार्यरत हूँ और इस पत्रिका के माध्यम से अपने कैडर की भूमिका पर प्रकाश डालना चाहता हूँ।

## संबंधों की कड़ी, संप्रेषण का सेतु

एक आशुलिपिक केवल टाइपिंग या नोट्स तैयार करने तक सीमित नहीं है। वह उस अधिकारी का सबसे करीबी सहायक होता है, जिसके साथ वह नियुक्त होता है। उसका कार्यक्षेत्र अत्यंत गोपनीय, संवेदनशील और विश्वास आधारित होता है। विभागीय फाइलों की जानकारी, महत्वपूर्ण बैठकों की तैयारी, समय-सारणी का संयोजन, और आने-जाने वालों से समन्वय–इन सभी में उसकी भूमिका अनिवार्य होती है।

## हर चेहरे से संवाद, हर मन से संबंध

एक स्टेनोग्राफर विभाग के प्रत्येक कर्मचारी व अधिकारी के साथ एक भावनात्मक व औपचारिक सेतु का कार्य करता है। वह बाहर से आने वाले आगंतुकों के लिए विभाग का पहला चेहरा होता है, जिसकी मुस्कान, व्यवहार व सहयोग भावना से विभाग की छवि बनती है। वह आगंतुकों की समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुनता है, उनका समाधान सुनिश्चित करता है, और उन्हें सम्मानित अनुभव कराता है।

## ज़िम्मेदारियों की श्रृंखला, परन्तु पहचान की कमी

जहां एक ओर आशुलिपिक विभाग के कार्यों की रीढ़ की हड्डी के रूप में खड़ा रहता है, वहीं दूसरी ओर यह भी कटु सत्य है कि पदोन्नति, पहचान और प्रोत्साहन के मामले में यह कैडर प्रायः उपेक्षित रहता है। वरिष्ठ अधिकारियों के अत्यंत निकट रहते हुए भी, स्टेनोग्राफर की भूमिका को न तो अक्सर नीतिगत चर्चाओं में स्थान मिलता है, न ही इसकी विशिष्ट प्रकृति को व्यापक मंचों पर स्वीकार किया जाता है।

## मौन का भी होता है मूल्य

एक आशुलिपिक का सबसे बड़ा गुण है–मौन में मुखरता। वह बोलकर नहीं, अपने काम से अपनी उपस्थिति दर्ज कराता है। उसके कार्य की गोपनीयता, तत्परता और विश्वास की नींव पर ही अधिकारियों का कार्य सुचारु रूप से संभव हो पाता है।

**हिन्दी जितनी सरल है,**
**उतनी ही व्यापक भी है।**

# मैं रघुवर हूँ

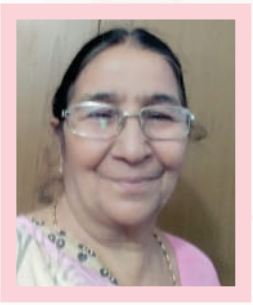

**शारदा जेटली,** माताजी, श्री दीपक जेटली, अधीक्षक, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मु. जयपुर

मैं रघुवर हूँ – मैं रघुवर हूँ।
अब तो शायद,
धरा पर आकर,
कहना होगा प्रभु को भी.....

मैं रघुवर हूँ
नहीं किसी नेता का राम!

मैं दशरथ का पुत्र राम,
मैं रघुवंश का रघुवर हूँ
मैं अवधपुरी का वासी
मैं विष्णु का अवतार राम
सीता का भरतार राम।

मैं कौशल्या माँ की,
आँखों का तारा।
दशरथ के प्राणों का प्यारा।

मैं रघुवर हूँ
नहीं किसी नेता का राम।

मैं अहिल्या का उद्धारक रघुवर,
मैं केवट का तारक रघुवर
ऋषियों के यज्ञों का रक्षक

मैं रघुवर हूँ
मैं नहीं किसी नेता का राम।
मैं भीलनी के बेरों का भूखा,
नहीं नेता की जय जय का भूखा।
मैं रघुवर हूँ ! -------

मैं नहीं तुम्हारी राजनीति का मोहरा,
तुम दूर करो मन का कोहरा
नहीं तुम्हारा प्रचारक।
मैं नहीं किसी दल का चालक।

मैं रघुवर हूँ हर प्राणी का,
सब के प्राणों का रक्षक हूँ।

मैं नहीं जानता जात पात,
मैं नहीं जानता ऊँच-नीच।

मैं नहीं किसी दल का नेता,
न करो नाम का दुरुपयोग।

मैं रघुवर हूँ।

मैं सबका हूँ सब मेरे हैं,
मैं हर उस चीज़ में बसता हूँ
जो सृष्टि में जानी जाती है।
क्यों लड़ते हो आपस में तुम,
मैंने तो ना बाँटा है तुमको।

सब मेरे हो मैं सबका हूँ।

मैं रघुवर हूँ।
हनुमान सबसे प्यारा,
वह है जग में सबसे न्यारा।

सीने में छुपा रख लिया मुझे।
मैं उसका राम।
मैं उसका राम।

मैं रघुवर हूँ।
मैं नहीं किसी नेता का राम।

मैं सच्चे मन में रहता हूँ,
मुझको ना भाता कपट-छल।
निर्मल मन जन मुझे पुकारे,
आने को रहता मैं तत्पर।

मैं रघुवर हूँ !
मैं रघुवर हूँ!
मैं नहीं किसी नेता का राम।

मुझको ना आता दाँवपेच,
मुझको ना भाती राजनीति।

मैं पक्ष-विपक्ष के ऊपर हूँ, सर्वशक्तिमान,
सर्व व्यापक हूँ।

मैं रघुवर हूँ।
मैं रघुवर हूँ।

# स्वच्छता पखवाड़ा – 2024

# दिनांक 21 जून, 2025 को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस

# जीएसटी परववाड़ा – 2025 के दौरान आयोजित साईकिल रैली की झलकियाँ

# जीएसटी परववाड़ा – 2025 के दौरान आयोजित साईकिल रैली की झलकियाँ

# जीएसटी दिवस समारोह–2025

# जीएसटी दिवस समारोह–2025

# सीमा शुल्क दिवस समारोह–2025

# सीमा शुल्क दिवस समारोह–2025

# सीमा शुल्क दिवस समारोह–2025

# सीमा शुल्क दिवस समारोह–2025

# डाटा दरबार

**आर. के. चंदन**, आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक), जोधपुर, मु. जयपुर

यह तब की बात है, जब पुरानी मुद्रा 500 और 1000 के नोट प्रचलन में थे। समाज कल्याण के उद्देश्य से एक सहकारी संस्था की स्थापना की गई, संस्था ठीक-ठाक चल रही थी। सभी अधिकारी-कर्मचारी जैसे-तैसे अपना दायित्व निभा ही लेते थे। संस्था का स्वास्थ्य यदि बहुत अच्छा न भी माना जाए तो भी संतोषप्रद तो था ही। लेकिन-

**नित्य परिवर्तन प्रकृति का स्वभाव है,**
**प्रगति-उन्नति से मानव का लगाव है।**

अतः नियम-कायदे बदले गए। सांख्यिकी बंदोबस्त को सुधारने के लिए आदेश हुआ कि गत 3 वर्षों की आय माहवार तरीके से बताई जाए।

आदेश की पालना हुई। आय की राशि, मान लो किसी वर्ष में 10 लाख रुपये थी, बता दी गई। फिर आदेश हुआ कि उक्त राशि को मुद्रा के Denomination के हिसाब से बताई जाए यानि कितनी राशि 1000 की मुद्रा के नोटों में है, 500, 100, 50... आदि के हिसाब से बताई जाए।

अब संस्था के मैनेजर को थोड़ी-सी दिक्कत तो हुई पर उन्हीं तथ्यों को आगे-पीछे करके बता दिया गया कि अमुक मात्रा 1000, 500... आदि नोटों में है।

उसके बाद यह फरमान आया कि अब उक्त राशि की जारी किए वर्ष के अनुसार पुनः गणना की जाए। पूरी सावधानी के साथ बताया जाए कि सबसे ज्यादा आय किन नोटों से हुई, कम आय किन नोटों से हुई तथा उचित कारण भी बताए जाए।

डाटा विश्लेषण (Data Analysis) यहाँ रुका नहीं। आदेश हुआ कि आरबीआई गवर्नर के हिसाब से पुनः गणना करके बताएं कि वास्तविक स्थिति क्या है? विश्लेषण (Analysis) और गहराता चला गया। उसके बाद का कार्य यह था कि यदि जारी किए गए नोट की सीरीज को एबीसी आदि के क्रम से गिना जाए तो कौन-सी सीरीज की मात्रा सबसे ज्यादा है और किस श्रेणी के नोटों की। और हाँ, गणना में गलती नहीं होनी चाहिए। ऐसा करते हुए यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिये कि पहले दिए गए आँकड़े प्रभावित न हों। यदि ऐसा हुआ तो उसे गंभीरता से देखा जाएगा; आप हँसिए मत, तभी ऊपर से एक और स्पष्टीकरण माँगा गया कि वार्षिक आँकड़े तथा आरबीआई गवर्नर वार आँकड़ों का आपस में तालमेल नहीं है। इस विषय पर एक रिपोर्ट स्पष्टीकरण व मानने योग्य कारणों के साथ तुरंत उपलब्ध करवाने का आदेश हुआ।

इसमें समस्या यह थी कि गवर्नर साहब का कार्यकाल न तो कलेंडर वर्ष के हिसाब से था और न ही वित्त वर्ष के हिसाब से। गणना करें तो कैसे करें।

**अब समस्या अति विकट थी,**
**मैनेजर के चेहरे पे ही प्रकट थी।**

और जिस माह के बीच में ही यदि गवर्नर साहब बदले हैं , तो उसका आँकड़ा बना पाना आसमान छूने से भी मुश्किल काम लग रहा था खैर, सारे काम-धाम छोड़कर, सभी इस भारी समस्या के समाधान में जुट गए, बहुतों के तो समाधान से पहले ही दम घुट गए।

फिर भी किसी तरह एक काम चलाऊ रिपोर्ट तैयार की गई, दंडवत क्षमा-याचनाएं की गईं तथा भविष्य में ऐसी भूल न करने की प्रतिज्ञा के साथ रिपोर्ट व स्पष्टीकरण भेजा गया।

सहकारी संस्था अब केवल आँकड़ों का विश्लेषण करने वाली सांख्यिकी संस्था बन कर रह गई और व्यवस्थापक जी आँकड़ों के जाल में ऐसे फंसे कि उनका चेहरा स्वंय एक 'आँकड़ा' बन कर रह गया।

# कैंसर : मेरा अनुभव

**ऋतु अग्रवाल,** सेवानिवृत्त अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर-ज़ोन, जयपुर

बात लगभग 22-23 वर्ष पुरानी है। एक रोज मेरे घर पर किसी ने दस्तक दी, मैंने दरवाजा खोलकर देखा सामने मौत खड़ी थी परंतु मुझे इसका बिल्कुल इल्म ही नहीं हुआ, मैंने दरवाजा खोल दिया और उसे अंदर आने दिया। अब वह मेरे साथ रहने लगी मैंने उसे हर वो चीज़ दी जिसकी उसे जरूरत थी। पर वह बहुत ही एहसान फरामोश निकली। धीरे-धीरे वह मेरे घर में अपना आधिपत्य जमाने लगी और फिर एक दिन ऐसा आया जब उसने मुझे मेरे ही घर से निकालने की ठान ली। मुझे तो जैसे काटो तो खून नहीं, एक बार को लगा बहुत देर हो चुकी है।

**घटना इस प्रकार है :-**

परमात्मा की कृपा से 23 वर्ष पूर्व मेरे घर एक स्वस्थ पुत्री ने ऑपरेशन से जन्म लिया। उसके जन्म के बाद मैं घर आ गई, मैं और पुत्री दोनों ही स्वस्थ नजर आ रहे थे, मैं बहुत खुश थी क्योंकि मैंने भगवान से बहुत मन्नत मांगी थी कि मुझे पुत्री हो, परंतु ये खुशियाँ बहुत समय नहीं चल पाई और शीघ्र ही बुखार ने मुझे आ घेरा। चेकअप करवाने पर पता चला कि टाइफाइड है। टाइफाइड की दवा खाने के बाद भी फीवर ठीक नहीं हो रहा था, जब भी टेस्ट कराया जाता हर बार टाइफाइड आता किसी भी प्रकार ठीक होने का नाम नहीं ले रहा था। परेशानियाँ बढ़ती जा रहीं थीं। धीरे-धीरे पीठ-दर्द भी रहने लगा। चेकअप पर चेकअप होते रहे पर कुछ समझ नहीं आ रहा था और इधर हालत बिगड़ती जा रही थी। कभी कहा गया कि आँत की टी.बी. हो गई, कभी कहा गया अल्सर है, कभी फिस्टुला बताया गया, भूख खत्म होती जा रही थी परेशानियां बढ़ती जा रहीं थीं। पीठ-दर्द अपनी चरम सीमा पर था। हमेशा 101-102 डिग्री बुखार रहता, उतरता, फिर चढ़ता, फिर उतरता फिर चढ़ता। जब उतरता तो पूरा शरीर पसीने से भीग जाता, बाल पूरी तरह गीले हो जाते जैसे नहा कर निकले हो, फिर धीरे-धीरे ठंड लगने लगती और पुनः बुखार चढ़ जाता फिर उतरता और पुनः मुझे पसीने से सराबोर कर जाता। मुझे अच्छे से याद है गर्मी के दिन थे और मई-जून के महीने में भी मुझे ठंड लगती थी मैं हमेशा कंबल ओढ़ कर सोती, बिना पंखा चलाए। और पीठ-दर्द इतना ज्यादा था की हॉट वाटर बोतल हमेशा मेरी पीठ से चिपकी रहती और इच्छा होती कि कोई मेरी पीठ में एक छेद कर के उसमें गर्म तेल डाल दे ताकि मुझे उस दर्द से निजात मिल सके। तड़पन इतनी थी कि अब भी उसके बारे में सोच कर मेरी रूह काँप जाती है। धीरे-धीरे वजन कम होता जा रहा था, भूख खत्म होती जा रही थी, सभी परेशान थे। एलोपैथी, आयुर्वेद, होम्योपैथी, नेचुरोपैथी, झाड़ फूँक, यूनानी सभी पैथी आजमाई जा चुकी थी। सभी ने अपने हाथ खड़े कर दिए थे अतः पुनः एलोपैथी की शरण में गए। फिजीशियन ने दवाई देने से इंकार कर दिया, वह बोले सर्जरी का केस है सर्जन के पास जाओ। सर्जन के पास गए सारी जाँच हुई और बताया गया कि मुझे बड़ी आँत का कैंसर है। घर में जैसे मातम सा छा गया। बेटी अभी 2 वर्ष की भी नहीं हुई थी। फर्स्ट सेकंड थर्ड ओपिनियन लेते रहे। कैंसर चिकित्सालय के वरिष्ठ चिकित्सक से जब मैंने पूछा कि मैं कितने समय जीवित रहूँगी तो उनका जवाब था कि पहले सर्जरी होगी तभी पता चलेगा कि कैंसर कितना फैल गया है और कौन से टाइप का है, अगर लीवर में चला गया है तो बचना मुश्किल है। पोस्ट सर्जरी कुछ थेरेपी हैं जिनसे मुझे कुछ समय जीवित रखा जा सकता है। परंतु अभी यह कहना मुश्किल है कि वह समय 6 महीने होगा या 1 साल या 2 साल। इससे ज्यादा की शायद वे कल्पना भी नहीं कर पा रहे थे। मेरे पांव के तलुए इस कदर पीले हो गए थे जैसे अभी-अभी हल्दी लगाई गई हो। मुझे भी समझ आ रहा था कि अब मैं जीवित नहीं रहने वाली हूँ। इस मरणासन्न अवस्था में मुझे सिर्फ मेरी पुत्री दिखाई दे

रही थी जो शायद अभी यह समझने में सक्षम नहीं थी कि माँ क्या होती है। मेरी माँ मस्कुलर डिस्ट्रॉफी की मरीज़ थी और लगभग 40 वर्ष उन्होंने बिस्तर में गुजारे परंतु पूरी जिंदादिली के साथ। अब मैं भी ईश्वर से यही माँग रही थी कि भले ही मुझे किसी भी स्थिति में रखें परंतु इतनी उम्र अवश्य दें कि मैं अपनी पुत्री को पाल सकूँ और उसकी शादी होने तक जीवित रह सकूँ।

स्टूल पास होना बंद हो चुका था। परिणामतः मेरा खाना भी लगभग पूरी तरह बंद था। इस एक हफ्ते में मेरा वजन लगभग 10 किलो कम हो गया था। मुझे सर्जरी के लिए अस्पताल में भर्ती कराया जा चुका था। सर्जरी का दिन भी लगभग नियत हो चुका था। परंतु प्रोथ्रोंबिन का लेवल कम होने की वजह से उसे दो-तीन दिन पोस्टपोन किया गया। इसी बीच मेरा पुत्र जो उस समय 5 वर्ष का था, उसका एनुअल फंक्शन था जिसमें वह वोट ऑफ थैंक्स बोलने वाला था। चूँकि मेरी स्थिति इतनी दयनीय थी कि यह सोच पाना मुश्किल था कि मैं किसी और फंक्शन को कभी देख पाऊँगी। अतः अंतिम इच्छा के तौर पर उस फंक्शन के लिए मुझे अस्पताल से छुट्टी दिलाई गई और मैं फंक्शन में सम्मिलित हुई। एक और सर्जन की ओपिनियन लेने के लिए उनके घर दिखाया गया, फ़िज़िकली चेक करने के दौरान लम्प बर्स्ट हो गया और अत्यधिक पैन से मैं कराह उठी परंतु दर्द का कारण मुझे या उन सर्जन को समझ नहीं आया। फिर हम घर आ गये। वह रात मैंने घर पर बिताई।

वह रात मेरे लिए कयामत की रात साबित हुई। जब मैं टॉयलेट गई तो शायद मेरा वह लंप जिसने मेरी बड़ी आँत ब्लॉक कर रखी थी और फट गया था और बाहर आ गया। मैंने देखा कि पॉट पूरी तरह ब्लड से भर चुका था। एकबारगी मैं बहुत डर गई परंतु उसके तुरंत बाद मुझे बहुत रिलीफ मिला और लगभग एक या डेढ़ महीने बाद उस रात मुझे नींद आई। दूसरे दिन मैं बहुत बेहतर महसूस कर रही थी। अतः तय किया गया कि अभी अस्पताल भर्ती नहीं कराया जाएगा। अस्पताल में मेरा बेड खाली पड़ा था। दो दिन बाद मैं अस्पताल गई और छुट्टी लेकर घर आ गई। इलाज हो चुका था, खतरा टल चुका था। मैं एक अविश्वसनीय घटना की गवाह बन चुकी थी। अब इसे मेरी इच्छा शक्ति की जीत कहें या माँ की दुआओं का असर या उन सवा लाख महामृत्युंजय मंत्र का प्रभाव जो माँ ने बिस्तर में लेटे-लेटे मेरे लिए किया या बच्चों का भाग्य।

या पति का दुर्भाग्य!!

सौजन्य से – लक्ष्य सावनानी पुत्र श्री गोपालदास सावनानी, अधीक्षक, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मु.-जयपुर

# फिर भी माँ बहुत अच्छी लगती है

**विवेक श्रीवास्तव**, सहायक आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मु. जयपुर

माँ अब लेटी रहती ज़्यादातर
बोलती नहीं ज़्यादा
सुनती भी है ऊँचा
झल्ला भी जाती है
फिर भी माँ, बहुत अच्छी लगती है।

बाबूजी के जाने के बाद
नहीं भरती माँग
रखती है सूना माथा
चेहरे से अब उदास सी लगती है
फिर भी माँ, बहुत अच्छी लगती है।

जागती है रात में अक्सर
खुल जाती है आँख मेरी उसके खाँसने पर
नहीं सो पाता मैं भी, ठीक से रात भर
रहता हूँ चिंतित उसके दिन-दिन ढलते स्वास्थ्य पर
माँ अब दवाइयों के सहारे ही चलती है
फिर भी माँ, बहुत अच्छी लगती है।

जड़ देती है चुम्बन
मेरे गाल पे अक्सर ही
फेर देती है हाथ सर पे रोज़ ही
और
मेरे लिये रोटी बनाने को
रहती है तत्पर अब भी
दे देती है सूचनाएँ, धीरे से मेरे कान में
और कर देती है शिकायतें ज़माने भर की

माँ की परिधि  हो गई है बहुत सीमित सी
कभी-कभी सब से नाराज़ सी लगती है
फिर भी माँ, बहुत अच्छी लगती है।

करती है इंतज़ार आने का मेरे
बचपन में जैसे करता था इंतज़ार
मैं आने का उसके
सो जाती है कभी भी बच्चों की तरह से
देखते हुए कोई धारावाहिक
बिना खाये-पिये
नहीं समझती कि दिन है या रात
भूल जाती है कि घर में है या बाहर
समझाओ कभी तो गुस्सा करती है
फिर भी माँ, बहुत अच्छी लगती है।

ले लेती है दवाई ख़ुद ही समझदारी से
समझती है दवाइयाँ, टिकिया के रंग से
ले लेती है कोई दवाई
ज़्यादा अगर गलती से
घबराती है फिर कि बिगड़ी जो कहीं
तबियत तो होगी परेशानी मुझे

ले लेती है कोई भी दवाई
मेरे बताने से
करती है विश्वास मुझ पर
ज़्यादा डॉक्टर से

कर देती है दस्तख़त
कहीं भी, मेरे कहने से
कभी-कभी कोई एक ही बात
बार-बार कहती है
फिर भी माँ, बहुत अच्छी लगती है।

हो गई है माँ बड़े मज़ेदार सी
कुछ का कुछ है समझ लेती
समझाऊँ कुछ अंग्रेज़ी की बात
जो मैं हिंदी में कभी
तो होती है नाराज़ कि
क्या मैं अंग्रेज़ी नहीं समझती?
अपने को ही माँ सही सदा समझती है
फिर भी माँ, बहुत अच्छी लगती है।

सुनता हूँ बड़ाई
अन्य सहोदरों की
और
खाता हूँ डाँट मैं
जोड़े से उसकी
आने वाली है कुछ समय में
बहू मेरे घर भी
कितना सौभाग्यशाली हूँ मैं
कि पाता हूँ माँ का सानिध्य मैं अब भी

रहती है ख़ुश नातिन, नाती
पोतों, पड़पोतों से
अपने बच्चों पे भले ही गुस्सा करती है
फिर भी माँ, बहुत अच्छी लगती है।

देती है आशीर्वाद वो
सभी को नम आँखों से
परे हो गई है वो निंदा स्तुति से
जिह्वा अब उसकी
किसी को नहीं बख़्शती है
फिर भी माँ, बहुत अच्छी लगती है।

ज़रूरत है माँ को अब
बहुत देखभाल की
करता रहता हूँ चिंता कि
न बिगड़े उसकी तबियत
और
न हो जाये कहीं उससे,
दूर मेरी बदली

बना रहे साया उसका रहते दम तक
रहता रहूँ छत्रछाया में उसकी
माँ अब अशक्त, निरीह
परेशान सी लगती है
फिर भी माँ, बहुत अच्छी लगती है।

दिवाली पर करती है इंतज़ार
बेटे पोतों के आने का
पूछती है बार-बार, कार्यक्रम उनका
देती है शगुन निकाल कर बटुए से
कहती है कि जाने में होऊँगी या नहीं,
अगली दिवाली पे

परिवार को माँ जोड़े से रखती है।
कभी-कभी बच्चों की तरह रूठ जाती है
बच्चों के सामने मुझे
बच्चों की तरह डाँट देती है
फिर भी माँ, बहुत अच्छी लगती है।

# हॉस्टल जाने के दिन

**अनिल जैन,** प्रशासनिक अधिकारी, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मु. जयपुर

आँखे खोलते हुए, बिस्तर संभालते हुए,
और नाश्ता करते हुए, लगा वो दिन आ ही गया,
सोचा फिर देखूं वो एंट्रेंस एग्ज़ाम का नतीजा,
शायद बदल जाए।।

अभी तक नजर नहीं मिली थी माँ से,
ढूँढे भी और मिलना भी नहीं चाहे,
मैं बोलूंगा भी क्या और सुनूंगा भी क्या,
शायद वो रो जाए।।

पापा को देख हिम्मत आई,
समझाए बोले घबराना क्या,
दिखाते नहीं है दिल सख्त है पर प्यारे हैं,
बोलता हूँ नहीं जा रहा, शायद मान जाए।।

चिढ़ा रहा है छोटा, कमरा मिल गया उसे,
लाड़ला तो खैर मेरा भी है,
पढ़ता नहीं है बिल्कुल, शायद सीख जाए।।

दादी देखे दूर से, दादा ढाढ़स बंधाए,
याद करता हूँ जब बचाते थे मुझे पापा की डाँट से,
महीने भर से समझा रहा था दोनों को,
शायद समझ जाए।।

क्या सपने परिवार से बढ़कर होते हैं,
उम्मीदें क्यों पूरी करूँ मैं,
किस किसका झूठा घमंड बनकर फिरूँ मैं,
रोने का नाटक कर लेता हूँ,
शायद कोई रोक ले।।

संभले बैग देखे माँ, कहे बेटा कुछ भूला तो नहीं,
डबडबाया बोला तुझे भी रख दूँ इसमें,
बाँध टूटा आखिर बोला चलता हूँ,
सोचा फिर देखूँ वो एंट्रेंस एग्ज़ाम का नतीजा,
शायद बदल जाए।।

**हिन्दी हमारे राष्ट्र की**
**अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है।**
**– सुमित्रानंदन पंत**

# कुछ संवेदना प्रकृति के नाम

**शालिनी वर्मा**, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर संभाग, सीतापुरा, जयपुर

## पहाड़ी की पीड़ा

मुझे काटते रहे तुम ! दूर दूर तक छिली हुई वृक्ष विहीन पहाड़ियाँ। खोद खोद कर अस्तित्व तो मिटा रहे हो, पर सोचा है कभी अरे मानुष, धरती पर कुछ भी हरा भरा प्रकृतिजन्य छोड़ोगे नहीं तुम, सिर्फ बचेगा कंक्रीट, लोहे के तार, गंदे केमिकल से भरे ज़हरीले नाले। फिर तुम्हारी भविष्य की पीढ़ी का क्या हश्र होगा? कितनी भयंकर बीमारियों से ग्रस्त हाँफती, कृत्रिम साँस पर ज़िंदा औलादों को कैसी विरासत दे जाओगे। क्यों विनाश पर तुले हो? समय चक्र तेजी से घूम रहा है। जो आज तुम धरती को दे रहे हो, तुम्हारी आने वाली नस्लें उनका परिणाम भुगतेंगी। लेकिन तय है कि तुम्हें वे विनाश का जनक बताएंगी। समय रहते संभल जाओ मानव, रोको अपनी तृष्णा को। या तो संरक्षित कर लो प्रकृति को बंद करो शोषण जंगल, पहाड़, नदियों, वृक्षों, जंतुओं का या फिर मत लाओ अपने वंशज इस वीभत्स दुनियां के साक्षी बनने के लिए!

पीड़ा से कराह रही थी वो छोटी पहाड़ी। क्या दुर्दशा की थी मनुष्य ने उसकी। पूरा बदन खोद दिया था, निर्वस्त्र (बिना घास, वृक्ष) एक जर्जर चट्टान के रूप में रह गई थी, कभी विशाल पर्वतमाला का गौरव मुकुट धारण कर जो खड़ी थी अडिग और अचल। अब इंतजार कर रही है अपनी अंतिम सांस का, जब उसे पूरा नेस्तनाबूद कर कोई बिल्डर बना देगा आसमान छूती अट्टालिका। उसकी कब्र पर बनेंगे मॉल्स, सोसायटी, सड़कें और पुल। क्या उसकी सिसकियाँ कभी देंगी गवाही इस मानुष के बर्बर आचरण के खिलाफ। शायद प्रलय की उद्घोषणा करेगी हिसाब बराबर। मानव की कोई युक्ति, बुद्धिमानी न आएगी काम उसके।

उस घड़ी का इंतजार कर रही है घायल और आहत प्रकृति!

## घर का दरबान

मिनी स्कूल से वापस आई , देखा घर के दरवाजे पर लगा गुलमोहर का विशाल पेड़ काटा जा रहा है, उसकी बड़ी बड़ी शाखाएँ धरती पर कट कर धराशायी हो रही हैं , लाल-लाल सुंदर फूल जमीन पर धूल में बिखरे पड़े थे। मिनी बदहवास सी घर में दाखिल हो माँ को पुकारने लगी। मां अपने काम छोड़ उसके पास आई । मिनी ने बाहर पेड़ कटने की सूचना देते हुए उसे तुरंत रोकने के लिए माँ से कहा। माँ ने शांत भाव से बताया कि यह पेड़ वह ही कटवा रही हैं क्योंकि बहुत गंदगी करता है, हर मौसम में इसकी पत्तियाँ झड़ती हैं, दरवाजा कभी साफ नहीं रह पाता। फिर इधर-उधर से गाय साँड आकर इसकी छाया में बैठते हैं और गोबर कर जाते हैं।

मिनी यह सुनकर अवाक रह गई, इतने प्यारे फूल और घनी छायादार वृक्ष को खोने का ग़म उसे उन पत्तियों और गोबर की समस्या से कहीं ज़्यादा महसूस हो रहा था।

उसने माँ को पेड़ कटवाने से मना किया तो वह बोलीं, तुझे तो सफाई करनी नहीं पड़ती इसलिए तुझे पेड़ कटवाना बुरा लग रहा है।

मिनी ने कहा माँ यह हमारी घर की शोभा बढ़ाता है। उसे मालूम था माँ नहीं मानेगी। उसने पापा को फोन लगाया पर पापा बोले तेरी माँ कई दिनों से इस पेड़ को हटवाने की जिद कर रही थी इसलिए उसे रोकना मुश्किल है, फिर कुछ सोच कर पापा ने कहा, मैं ऐसा करता हूँ, पूरा पेड़ न कटवा कर तना छोड़ देने के लिए मजदूरों को कहता हूँ इससे तेरी माँ की बात भी रह जाएगी और पेड़ मरेगा भी नहीं।

वह पेड़ ठूंठ के रूप में गेट पर मिनी को सांत्वना देने खड़ा रह गया। आते जाते मिनी उसे सहला देती।

लेकिन उस घर की सुंदरता बिन लहलहाती हरी पत्तियों से भरी डाली और

चटख लाल फूलों के बिना अधूरी सी मालूम होती। मिनी को ऐसा लगता जैसे घर की चौखट सूनी सी है।

सर्दी का मौसम गया और गर्मियाँ आ गईं। घर के दरवाज़े पर पत्तियाँ नहीं थी लेकिन बरामदा गर्मी से झुलस रहा था, घर की दीवारों पर भी गर्मी का अधिक असर महसूस हो रहा था। पापा ने माँ से कहा, यह सब पेड़ कटवाने का दुष्परिणाम है।

माँ भी कुछ अधूरा सा महसूस कर रही थी। एक दिन मिनी ने देखा, माँ पेड़ की जड़ में खाद डाल रहीं है। मिनी भी रोज पेड़ को पानी दे रही थी पर वह पेड़ बेजान सा रूठा खड़ा था।

वर्षा ऋतु आ गई थी, सब जगह हरियाली हो रही थी पर उस गुलमोहर के ठूँठ रह गए तने में कोई परिवर्तन न दिखा। अब तो मिनी भी उस पेड़ के पुनर्जीवित होने की आशा छोड़ बैठी थी। एक वर्ष बीत चुका था उस वृक्ष को कटे हुए! एक दिन माँ बड़े दुखी मन से बोली, मैंने वाकई अच्छा नहीं किया पेड़ कटवाकर! वह पेड़ तो इस घर के सुसज्जित दरबान का काम करता था, उसकी अलग ही रौनक थी, मैं एक नया पौधा लाकर लगा देती हूँ, उसी के पास। मिनी और पापा ने उनका समर्थन किया।

अगले दिन स्कूल जाते हुए मिनी की निगाह ठूँठ पेड़ पर पड़ी, छोटे छोटे कोमल पत्ते झांक रहे थे। मिनी ने खुशी से माँ पापा को आवाज़ लगाई। तीनों उन पत्तों को देख ऐसे आनंदित हो रहे थे जैसे कोई खोई हुई अमूल्य वस्तु वापस मिल गई हो।

माँ और मिनी के प्यार दुलार और देखरेख ने जल्दी ही उस गुलमोहर के पेड़ को मूल स्वरूप में विराजमान कर दिया था घर के सुसज्जित दरबान के रूप में!

# दर्शन देखूँ या दर्द?

**प्रशांत पूनियाँ,** कार्यालय मुख्य आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर, जयपुर ज़ोन, जयपुर

वो महादयालु, महागुणी
संगत उसका विधान,
सकल मही अभिव्यक्ति उसकी
करूणा है इन्सान।

पुजारी बोलता इन शब्दों को,
तिरछी नजर से तोलता भक्तों को,
देव भला करे सब का, कब का
वास्ता दे रहा है कोई रब का।

उठा भक्त भिखारी को देख,
बैठा था सीढियों पर लगा टेक,
फेंक पुष्प रोका पुजारी ने,
खंडित देख अपनी भेंट ।

विषयों में लिप्त है भिक्षुक,
इच्छुक है मुफ़्त मुद्रा का
शूद्र है पियेगा मदिरा
लगाया तकाज़ा।

बैठा भक्त लगा ध्यान ईश में,
कमतर फीस में,
मनोकामना होगी पूरी सभी,
मुराद जो मांगी कभी।
दान थाली में रखकर सोचा भक्त ने,
सख़्त होकर दिया तो हिसाब होगा रक्त में।
इतने मरते हैं, एक और मर जायेगा जर्द से !
असमंजस, दर्शन पढ़ूँ या देखूँ दर्द मैं !

# कविताएँ

**संदीप मीना,** कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

## तुम कौन हो?

वे जो बचपन में यूँही डराया करते थे
वे बेतुके से डर
अब परिपक्व हो गए हैं
जो भाग जाया करते थे दिन के उजालों में,
जो काँप जाया करते थे मेरी माँ के आँचल की छाँव में
वे बेतुके डर अब बड़े हो कर
डराने लगे हैं दिन के उजालों में।
नही पर ये वो नहीं,
वे ऐसे तो न थे।
सच बताओ तुम कौन हो ?
तुमने पहले तो कभी डराकर नींद नही उड़ाई
तुमने पहले तो कभी अकेला नहीं बनाया।
सच बताओ तुम आखिर हो कौन ?
नहीं, मैं तुम्हें नहीं पहचानता
तुम ज़रूर कोई नए हो
रास्ता भटक गए हो शायद
तुमको लौट जाना चाहिए,
वहीं अल्हड़पन
मैं यहाँ शून्यता के अलावा कुछ नहीं।

## स्व दीप्ति

तुम अंदर तक शांत रहो
कुछ सुनोगे ज़रूर
तुम पाओगे ज़रूर उस तली को
जो होगी अलग हर किसी की तली से
वो होगी बस तुम्हारे नाम की
जिस के हर हिस्से के अणु
चमक देंगे तुम में तुम्हारे ही उस निवेश की
जो किया है तुमने निष्पक्ष और निस्वार्थ हो कर

तुम रहो शांत, अग्नि को अभी और बढ़ने दो
तुम जोड़ो खुद को इस अग्नि से
तुम पाओगे ज़रूर उस अग्नि में
तुम्हारी छवि
जो होगी अलग हर अग्नि से।

## वह सुबह की सूरज सी किरण

वह सुबह की सूरज सी किरण,
कुछ झुठलाई सी आँखों में,
बातों के ढेर लिए हुए,
रखती है कदम,
जीवन धरातल पर।

उन यादृक्षिक सी आँखों में,
जज़्बात लिए,
कुछ एहसास लिए,
मेरे अंतर्मन को भेदकर,

हृदय मे जमी वर्षों की रुखाई को,
सींचते हुए,
उन्माद भर कर
रखती है कदम,
वह जीवन धरातल पर।।

# अंगद

**विवेक श्रीवास्तव,** सहायक आयुक्त, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मु. जयपुर

## हाँ

मैं पहुँच जाऊँगा

बच्चों के लिए कार्यक्रम में भाग लेकर मुझे बहुत ख़ुशी होगी।

बाल श्रम निषेध पर परिचर्चा का आकाशवाणी का निमंत्रण स्वीकार करते हुए मैंने मोबाइल रखा और मानस का लंका कांड फिर पढ़ने लगा।

अंगद ने तो कमाल कर दिया ! शूरवीर, रावण से जा भिड़ा !

कल रामचरित मानस पर लंका कांड पर मेरा व्याख्यान भी मानस क्लब में होना था और बाल श्रम निषेध पर परिचर्चा में भी भाग लेना था, उसके लिए भी नोट्स बना लिए थे।

उदयपुर शहर में स्थानांतरित हो कर आया, उससे पहले ही मेरे साहित्यकार होने के बारे में विद्वजनों को पता चल गया। निमंत्रण आने लगे। अभी परिवार नहीं लाया था, क्योंकि बच्चे जयपुर के सेंट ज़ेवियर्स स्कूल में पढ़ रहे थे, जहाँ बच्चों को पढ़ाना हर शहरी का सपना होता है। सरकारी आवास आवंटित होने में कुछ समय लग रहा था इसलिए होटल में ही रुका हुआ था।

मैं फिर अंगद के चरित्र पर नोट्स बनाने लगा।

रिसेप्शनिस्ट का फ़ोन कई बार डिनर के लिए आ चुका था।

ओह ! रात के ग्यारह बज रहे हैं।

नहीं, रूम में मत भिजवाएँ, मैं रेस्टोरेन्ट में ही खाऊँगा, अभी आता हूँ।

कह कर मैंने फ़ोन रख नोट्स जेब में ही रख लिए, क्या पता खाना खाते में ही कोई बिंदू दिमाग़ में आ जाये, बहुत सी रचनाएँ खाना खाते में भी हुई हैं।

जाकर टेबल पर बैठा।

एक छोटा 8-9 साल का प्यारा सा बच्चा फिर दिखाई दिया जो सुबह मोबाइल पर खेल रहा था, शायद किसी ट्यूरिस्ट का होगा, इतनी रात तक जग रहा है।

क्या नाम है बेटा तुम्हारा ?

अंगद

बहुत अच्छा नाम है। अंगद तो बहुत बहादुर लोगों का नाम होता है।

कितने साल के हो ?

नौ

कौनसी क्लास में पढ़ते हो ?

वो चुप रहा, शायद शरमा रहा होगा।

कहाँ से आये हो....

तभी रिसेप्शनिस्ट की आवाज़ आई

अंगद,

साहब के लिये

पहले स्टार्टर लगा दे।

नाम सुन कर मैं चौका

अंगद??

रिसेप्शनिस्ट ने कुछ भाँपते हुए कहा-

ग़रीब घर से है, खाने के लाले हैं, ट्यूरिस्ट सीज़न है, कुछ कमा लेगा, इस सीज़न में लेबर मिलते भी नहीं है।

मेरा उत्साह मर गया

आकाशवाणी और ऑफ़ीसर्स क्लब फ़ोन किया-

मैं कल नहीं आऊँगा

और नोट्स की चिंदियाँ जेब में डाल लीं।

# मैं भी छोटा हूँ...

**आशीष वर्मा**, कर सहायक, सीमा शुल्क (निवारक) आयुक्तालय, जोधपुर, मु. जयपुर

नमस्ते! मेरा नाम अक्षय है। मैं सात वर्ष का हूँ। आपके पास अगर थोड़ा सा समय हो तो मैं आपको कुछ बताना चाहता हूँ। पहले मैं अकेला ही था। मतलब मेरे मम्मी-पापा और मैं, बस! लेकिन पापा ऑफ़िस चले जाया करते थे और मम्मी को घर के काम से फुर्सत न थी। तब, मम्मी अक्सर मुझे पड़ोस में छोड़ आया करती थीं। उन दिनों पड़ोस में एक बड़ा परिवार रहता था। मुझसे थोड़े कम-अधिक उम्र के तीन बच्चे भी थे वहाँ। और मैं था चौथा। हम लोग देर तक खेलते रहते थे। पर जब उन्हें मेरे साथ नहीं खेलना होता था तो वे मुझे टालते और अपने घर लौट जाने को कहते। ऐसे समय मैं सोचता कि मेरे ही घर में मेरा कोई छोटा भाई या बहन हो, जिसके साथ मैं जब चाहूँ खेल सकूँ, तो कितना अच्छा हो! यह बात कई बार मैंने मम्मी-पापा को बताई भी थी। और एक दिन मुझे वह खुशखबरी मिल ही गई।

मम्मी ने मुझे बताया, 'बेटा! तुम्हारे साथ खेलने वाला कोई आने वाला है।' मैंने उत्साह से मम्मी से पूछा, 'कौन आने वाला है, भाई-या बहन ?' मम्मी कहने लगी, 'कोई भी आ सकता है।' और एक दिन विनय आ गया। एकदम छोटा-सा, प्यारा-सा विनय। विनय को देखकर मुझे कितनी खुशी हुई थी, आपको क्या बताऊँ! स्कूल से लौटकर आने के बाद बस्ता एक ओर रखकर मैं सबसे पहले विनय से मिलता।

धीरे-धीरे विनय बड़ा होने लगा। शैतानी भी करने लगा। जब से उसने चलना शुरू किया, तब से उसकी शैतानी और भी बढ़ने लगी। जब मैं मम्मी- पापा से इस बात का ज़िक्र करता, तो वो कहते, 'छोटे बच्चे ऐसे ही होते हैं।' वे साथ में यह भी जोड़ देते कि जब मैं छोटा था तब मैं भी ऐसे ही करता था। मैं यह सब सुनकर सहन करता रहा। लेकिन एक दिन विनय के कारण मुझे मम्मी-पापा की बहुत डाँट खानी पड़ी।

दरअसल, उस दिन मेरी छुट्टी थी। हम दोनों ने साथ-साथ दूध पिया। मम्मी ने कहा था कि दूध पीने के बाद हमेशा की तरह मैं मग धोने के लिए रख दूँ। मैंने दूध पीकर अपना मग टेबल पर रख दिया और विनय का मग ख़ाली होने की राह देखने लगा। उस समय टीवी पर कार्टून चल रहा था। विनय ने अपना मग ख़ाली किया और मेरा मग उठाकर रसोई की ओर भागने-लगा। मेरा ध्यान जाते ही मैं 'अरे! अरे!' करता हुआ उसके पीछे दौड़ पड़ा। शायद रसोई के रास्ते में थोड़ा-सा पानी गिरा था। विनय वहाँ फिसलकर धड़ाम से फ़र्श पर गिर पड़ा। उसके सामने वाले दाँत होंठ में घुस जाने की वजह से थोड़ा सा खून निकल आया था। वह ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा। उसे रोता देखकर या शायद उसका ख़ून देखकर मुझे भी रोना आ गया। इधर फ़र्श पर गिरकर दोनों मग टूट गए थे। पापा ने हम दोनों के लिए विशेष रूप से हमारे फोटो-प्रिंट वाले थोड़े बड़े आकार के मग तैयार करवाए थे। टूटने पर पापा और मम्मी दोनों ने मुझे ही डांटा। दोनों कहने लगे कि मुझे विनय के पीछे दौड़ना नहीं चाहिए था। मैंने कितना कहा कि मुझे लगा कि विनय दो मग नहीं सम्भाल पाएगा, गिरा देगा। इसलिए में उसे रोकना चाहता था, न कि उसे पकड़ना या गिराना। लेकिन दोनों यही कहते रहे कि चूँकि मैं बड़ा हूँ, इसलिए इन सब बातों का ध्यान मुझे ही-रखना चाहिए।

उसके बाद तो जैसे डाँट का सिलसिला ही शुरू हो गया। गलती विनय करता और डाँट मुझे पड़ती। यहां तक फिर भी सब ठीक था, लेकिन आगे मेरी परेशानियाँ और बढ़ने लगीं। पापा हम दोनों को खिलौने दिलाने के लिए दुकान पर लेकर जाते थे। मैं खिलौना पसंद करने के लिए जानबूझ कर पहला मौका विनय को देता था। उसके खिलौना चुनने के बाद ही मैं अपना खिलौना पसंद करता था। लेकिन घर आने के बाद विनय को

मेरा ही खिलौना चाहिए होता था। पापा का कहना होता था कि मैं बड़ा हूँ, इसलिए मुझे ही समझदारी दिखानी चाहिए। यानी अगर में अपना खिलौना विनय को न दूँ, तो मैं समझदार नहीं हूँ।

एक ओर पापा मुझे अपने हक के लिए लड़ने वाली ग़िलहरी की कहानी सुनाते हैं, तो वहीं दूसरी ओर अपना हक छोड़कर समझदार बनने को कहते हैं। ऐसे में न मैं बहुत कनफ़्यूज़ हो जाता हूँ। अब पिछली बार की ही बात ले लीजिए। विनय की हरकतों को देखते हुए मैंने अपने लिए भी हूबहू वही गुब्बारा चुना, जैसा विनय ने अपने लिए चुना था। घर आकर विनय ने अपना गुब्बारा पापा के लैपटॉप पर रख दिया और भीतर चला गया। कुछ ही पलों में उसका गुब्बारा फट गया। वह दौड़कर बाहर आया और मेरा गुब्बारा अपने हाथ में उठाकर चिल्लाने लगा, 'भैया का गुब्बारा फट गया। मेरा तो वैसे का वैसा ही है।' मेरे हाथ में गुब्बारे के चीथड़े देखकर मम्मी-पापा को भी लगा कि शायद मेरा ही गुब्बारा फट गया होगा। देखते ही देखते विनय मेरा गुब्बारा लेकर आँगन में भाग गया। मेरी आँखों से आँसू निकल आए। पापा फिर से मुझे ही समझाने लगे, 'तुम बड़े हो न!'

अब तो अपने लिए नए खिलौने ख़रीदने मे मेरी कोई रुचि ही नहीं रही है। कभी पापा खूब मनुहार करते हैं, जैसे मेरे जन्मदिन पर या मेले वगैरह दिखाने ले जाते हैं, तब ले लेता हूँ। ले तो लेता हूँ, लेकिन मन ही मन यह दोहराता रहता हूँ कि यह खिलौना तो वैसे भी विनय के लिए ही है। मेरी हर चीज विनय को चाहिए होती है और जब मम्मी पापा से इस बात की शिकायत करो तो यही सुनने को मिलता है 'तुम बड़े हो न! समझदार बनो!' अब तो मैंने इन सभी चीजों को मेरी बदकिस्मती समझ के स्वीकार कर लिया है। मन करता है कि इस घर को छोड़कर चला जाऊँ क्योंकि वैसे भी मेरी फिक्र तो अब किसी को रही नहीं। लेकिन आजकल एक नयी मुसीबत खड़ी हो गई है। मैंने आज तक के अपने सारे खिलौने खूब संभाल कर रखे थे। अब मैं उन्हें ही निकालकर खेलता रहता हूँ। लेकिन अब विनय को मेरे वही पुराने खिलौने चाहिए। एक तो वह अच्छे से खेलता भी नहीं है। समझाने जाओ, तो पटक-पटककर तोड़ देता है। आपको विश्वास नहीं होगा, लेकिन पिछले कुछ दिनों में ही उसने मेरे आठ-दस खिलौने तोड़ दिए हैं।

वैसे, मेरे मन में एक बात और भी है। जब मैं छोटा था, तो पापा मुझे खूब प्यार करते थे। छुट्टी के दिन तो कितनी देर तक पापा के पेट और पीठ पर लदकर खेलता रहता था मैं। मेरे पापा का पेट है न! यह उलटी तश्तरी के समान थोड़ा उभरा हुआ है। वे पलंग पर पीठ के बल लेटकर मुझे अपने पेट पर बिठा लेते और जोर-जोर से पेट में साँस भरते-छोड़ते। मुझे ऐसा लगता जैसे मैं ऊँट की सवारी कर रहा हूँ। मम्मी भी छुट्टी के दिन मुझे तेल लगाकर और रगड़-रगड़ कर खूब नहला देती थीं। लेकिन आजकल इन सब पर विनय ने कब्ज़ा जमा लिया है। आप इससे अंदाज़ा लगा सकते हैं कि परसों मैंने मम्मी से मेरे नाखून काटने के लिए कहा तो मम्मी ने कहा, नेल-कटर पापा के शेविंग-बॉक्स में है। निकालकर ख़ुद कर लो बेटा अब तुम बड़े हो गए हो...

और हाँ! आपको पता है कि आजकल कोई भी हमारे घर आया कि बस, विनय के बारे में ही बातें होती रहती हैं। उसने कब क्या शरारत की, किससे क्या कहा, कब क्या खाने को माँगा, कब क्या तोड़ा, कब क्या नहीं खाया, उसे क्या पसंद है... उसे क्या नापसंद है, वगैरह-वगैरह! पहले कम से कम मेरी पढ़ाई की तो बातें होती थीं। मुझे किसी के सामने कोई कहानी या कविता सुनाने को भी कहा जाता था। लेकिन आजकल मेरे लिए किसी के पास समय ही नहीं रहता। अभी कल-की ही बात है। अनिकेत अंकल और नेहा आंटी आए थे। उनकी बेटी प्री-केजी में है। मेरी ही स्कूल में है वो भी। अपने सेक्शन में वो सेकंड आई है। अंकल-आंटी ने कितना बताया उसके बारे में। उसको टीचर 'ये' कह रही थी, 'वो' कह रही थी। जबकि मैं पूरे सैकंड क्लास में यानी, ए, बी, सी, डी इन चारों सेक्शन में फर्स्ट आया हूँ। मैं मम्मी और पापा की तरफ़ देख रहा था कि वे मेरे रिजल्ट के बारे में कुछ बतायेगे लेकिन कुछ भी नहीं। आखिर में जब मैं अपनी बात कहने के लिए मम्मी के पास गया तो उन्होंने कहा की हम लोग बातें कर रहें हैं, तुम ज़रा बाहर जाकर खेलो। वैसे अनिकेत अंकल और नेहा आंटी बहुत अच्छे हैं। मालूम है, केजी वन में मेरा रिजल्ट देखकर उन्होंने मुझे तोहफ़ा भी दिया था।

इन सब चीजों के कारण विनय अब इतना जिद्दी और शैतान हो चुका है कि पूछो मत। कभी कभी तो मम्मी पापा

पर हाथ भी उठा लेता है तो उसको छोटा समझकर कुछ नहीं बोलते। एक बार उसने मुझे मारा और जब मैं रोने लगा तो मम्मी ने कहा 'बड़े हो, समझदार हो। क्या हो गया उसने तुम्हें मार दिया तो? तुम्हारा छोटा भाई ही तो है!' इसका मतलब मैं बड़ा हूँ तो मार भी खाता रहूँ, और कुछ बोलू भी न.. अभी कुछ समय पहले मेरी कक्षा में तीसरी रैंक आई और उसकी पहली। हालाँकि प्रतिशत अंक मेरे ही ज्यादा थे फिर भी उसने मुझे भैया फेल हो गए, बोल बोलकर चिढ़ाया और मम्मी-पापा ने भी मुझे ही बोला कि तुमने पढ़ाई कम की होगी। जबकि स्कूल में सभी मेरी तारीफ करते हैं, मेरे औरों से बर्ताव, मेरा अध्यापकों के प्रति सम्मान, स्कूल का होमवर्क समय पर देना और हमेशा समय पर पहुँचना। लेकिन ये सब तो सारे बड़े भाई करते हैं, ऐसा मेरे मम्मी पापा को लगता है। मैं उन्हें बोलता हूँ कि देख लेना, आगे जाकर ये किसी की नहीं सुनेगा क्योंकि आप लोगों ने इसे कभी भी खुद की गलती का अहसास होने ही नहीं दिया, उल्टा सामने वाले को ही दोषी ठहरा दिया। तो आगे जाकर ये आप लोगों की भी नहीं सुनेगा।

वैसे, आजकल मेरी एक ही ड्यूटी है। हमारे घर किसी के आने पर उठकर उन्हें नमस्ते करो और कभी-कभी उनके लिए पानी ले जाकर दे दो। उसके बाद तो सारा माहौल, सारा घर विनय का हो जाता है। अक्सर मम्मी-पापा पूछते रहते हैं कि मैं आजकल गुमसुम-सा क्यों रहता हूँ। अब मैं उन्हें क्या बताऊँ। कई बार तो लगता है कि ये सारी बातें जो मैंने आप सभी से कही, वो जाकर ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाकर मम्मी-पापा को बताऊँ। लेकिन मुझे पता है, वो क्या कहेंगे। वो यही कहेंगे कि अक्षय बेटा; तुम बड़े हो चुके हो न ! तुम्हें अब समझदार होना चाहिए। इसलिए मैंने सोचा, आपसे ही कह दूँ। माना कि विनय के आने के बाद मैं बड़ा हो गया हूं, लेकिन मैं भी हूँ तो छोटा ही न!

जयगढ़ किला, जयपुर

# बरसात का एक दिन

**मनोज कुमार मनवानी,** अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, अलवर

उड़ती हुई बारिशों में
खेत-खलिहान बरसते हुए
हरियाली चादरों पे
पगडंडियां फिसलते हुए
झीलों पे चलते हैं
चलो दूर कहीं
उन क्षितिजों पे मिलते हैं

ठंडी फुहारों से
तन-मन भिगोते हुए
बारिशों के छींटों से
अधखुले चाँद धोते हुए
झरनों पे चलते हैं
चलो दूर कहीं
उन परबतों पे मिलते हैं

सिकुड़े हुए मोड़ों के
गड्ढे कूदते हुए
भीगे हुए रास्तों में
नदियां बहाते हुए
कागज़ की कश्तियों पे चलते हैं
चलो दूर कहीं
उन टपकते छप्परों पे मिलते हैं

बिगड़ैल आसमानों से गिरे
परिंदे उठाते हुए
टूटे घरों से
तिनके चुराते हुए
नए घोंसले बुनते हैं
चलो दूर कहीं
उन सहमे दरख़्तों तले मिलते हैं

सुरमई शाम को
सायों में समेटते हुए
थरथराते कैनवास में
रंग लपेटते हुए
बिगड़ैल आसमां पेंट करते हैं
चलो दूर कहीं वादियों में
इंद्रधनुषों पे मिलते हैं

# अधूरापन...

**संदीप मीना,** कनिष्ठ अनुवाद अधिकारी, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

मुस्कुराई हुई सी निकली है वह
(चाँदनी)
चाँद भी उसे ओढ़े इतरा रहा है
गुमान है उसे
वही है इस अंधेरे में
एक मात्र उजाला

और फिर कुछ काले वस्त्र
ओढ़े हुए
शख़्स गुज़रा अभी-अभी
(काले बादल)
और बिखर गई मुस्कुराहट
क्षण भर में

उसकी
जिसे गुमान था खुद पर
नहीं भेद पाया
उस काले वस्त्र को
शायद अब बोध हुआ है उसे भी
एक अधूरेपन का।

# हृदय और मानस

**निखिल भारद्वाज**, भाई श्रीमती नीता शुक्ला, व.अनु. अधिकारी, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

हृदय तुम तो बड़े ही चतुर हो, हो भी क्यों न सब तुम्हारा ही ध्यान रखते हैं, थोड़ा सा भी तुम ऊपर नीचे हो जाते हो तो सबकी सांसें अटक जाती हैं, तुम्हारे लिए लोग अच्छा और सात्विक भोजन ग्रहण करते हैं, अच्छी दिनचर्या का अनुकरण करते हैं, समय का उचित प्रयोग करते हैं, सभी अनुचित क्रियाओं का ध्यान रख कर उसका निवेदन करते हैं, ऊर्जा का अपव्यय वर्जित करते हैं.....

अरे अरे बंधु बस भी करो... आज क्या हो गया तुमको... क्यों इतने वृहद वचनों से मुझे निःशब्द कर रहे हो... हृदय ने मानस को सम्बोधित करते हुए कहा।

एकाएक मानस पुनः अपने कथनों को दोहराते हुए प्रारंभ हो गया... हृदय ने फिर से उसकी वाणी को विराम करते हुए कहा कि क्या हो गया बंधु... कुछ तो भिन्न सम्भाषण करो...

इतने पर मानस ने अपने आप को संभालते हुए कहा कि... मेरा तो कोई भी ध्यान नहीं रखता... क्योंकि तुम मनुष्य के शरीर को चलायमान करते हो तो सब केवल तुम्हारी ही संरक्षण की सोचते हैं, मेरे विषय में तो कोई तनिक भी नहीं विचारता।

हतप्रभ हृदय ने कुछ समझते हुए तथा अपनी गति को मध्यम करके बोला कि... तुम व्यर्थ ही व्याकुल हो रहे हो...

मानस ने एक बार पुनः अपने संभाषण को प्रारंभ करते हुए कहा कि... देखो मेरी चिंता को एक बार श्रवण कर के देखो

ना मुझे कोई सुविचारों से पोषित करता है, ना ही कोई ध्यान मुद्रा में ले कर जाता है, ना ही मेरे लिए कोई परिशिष्ट का संरक्षण करता है, कुल मिला कर मानव मुझ को शिथिल कर के रखते हैं, जबकी मैं ही सब कुछ अपने में समा कर लंबे समय तक संजो कर रखता हूं... फिर भी कोई भी मानव मेरा उतना ध्यान नहीं रखता जितना की तुम्हारा और आज कल एक व्याधि चल गई है जिसको मानव स्मार्ट फोन बोलता है, उसी की आवश्यक व अनावश्यक सामग्री को देखता है और मुझको क्षीण और अस्वस्थ कर देते हैं।

अब मानस की ये सब व्यथा सुनकर हृदय का आत्मविश्वास डगमगा गया... फिर भी हृदय ने मानस को संभालते हुए कुछ रुक कर उसकी वार्तालाप का मंथन किया..

वैसे तो यह एक हृदय और मानस का लघु संवाद है, परंतु मानव होने के नाते हमको भी थोड़ा अपने दिनचर्या और क्रियाकलापों पर ध्यान देना चाहिए... क्योंकि पता नहीं आज का व्यक्ति किन कार्यकलापों में व्यस्त है, पैसे कमाने की दौड़ में पता नहीं क्या-क्या किया जा रहा है और ये सब क्यों ही वो किए जा रहे हैं, जीवन परम लक्ष्य को जाने बिना ही चल रहा है उसके लिए एक थोड़ा सा व्याख्यान कुछ इस तरह है....

सबसे महत्वपूर्ण प्रश्नों में से एक जो हम खुद से पूछ सकते हैं, वह है, मुझे कितना चाहिए?

उसके बाद हम जो कुछ भी प्राप्त करते हैं, अर्जित करते हैं, संचित करते हैं, वह डिस्पोजेबल अधिशेष है।

जिस तरह से हम इस डिस्पोजेबल अधिशेष को वितरित करते हैं, वही हमारे जीवन को अर्थ देता है।

यह प्रश्न पूछने के लिए साहस चाहिए।

ईमानदारी से उत्तर की खोज करने के लिए अधिक साहस चाहिए।

उत्तर के अनुसार जीने के लिए पागलपन की सीमा तक अत्यधिक साहस चाहिए।

लेकिन, ऐसे जीवन जीने के पुरस्कार अद्भुत हैं।

कुछ क्षणों के लिए... कल्पना करें,

भय रहित जीवन। लालच रहित जीवन। असुरक्षा रहित जीवन। भावनात्मक

उथल-पुथल रहित जीवन। कुल मिलाकर, एक शांतिपूर्ण और उद्देश्यपूर्ण जीवन की कल्पना करें।

यदि आप अपने प्रश्न, मुझे कितना चाहिए? के उत्तर के साथ जीते हैं, तो यह आपका है।

**मुख्य अनुयोजन बिंदु:-**

परिभाषित करें, आपको कितना चाहिए। किसी और को इसका उत्तर न बताने दें। उत्तर देने में अपना समय लें। लेकिन उत्तर अवश्य दें।

जब भी आपके पास अतिरिक्त कुछ भी हो, उसे अपने मन की इच्छा के अनुसार वितरित करें। याद रखें, आपको अपनी ज़रूरत की चीज़ों को बाँटने की ज़रूरत नहीं है। अतिरिक्त को वितरित करें।

अब हृदय और मानस को गंभीर संवाद वापस से जोड़ता हूँ.... हृदय ने अपने भी अंतर्मन से मानस की व्यथा पर कुछ प्रकाश डाला, क्योंकि हृदय जानता था कि मानस को ये नहीं पता कि मेरी गति भी मानस परिवर्तन पर कितना निर्भर है, मानस प्रसन्न है तो मैं सही चलूंगा, मानस दुखी है तो मेरी भी गति बाधित होती है।

तो मानस का ढाँढस तो बढ़ाना पड़ेगा, हृदय ने अपनी व्याख्या प्रारंभ की-

सुनो प्रिय बंधु मानस

मान लो कि किसी किसान के पास थोड़ी भूमि है। यह एक अच्छी, उपजाऊ भूमि है।

किसान के पास स्पष्ट विकल्प है। वह उस भूमि पर जो चाहे बो सकता है। यह उसकी भूमि है। अब, भूमि को इस बात से कोई प्रभाव नहीं पड़ता कि किसान क्या बोता है। यह निर्णय किसान पर निर्भर करता है।

अब, मान लीजिए कि किसान के हाथ में दो तरह के बीज हैं- एक चना के बीज, दूसरा एकी फल (जो एक घातक विष है)।

वह अपनी भूमि के एक छोटे से हिस्से को जोतता है और दोनों बीज बोता है- चना के बीज और एकी फल के बीज।

वह जोतने वाली भूमि को पानी देता है और उसकी देखभाल करता है। अब, आपको क्या लगता है कि क्या होगा?

यह स्पष्ट है, है न?

भूमि जो बोएगी, वही लौटाएगी।

याद रखें कि भूमि को इसकी परवाह नहीं है। यह उतनी ही मात्रा में घातक विष लौटाएगी जितनी कि चना देगी।

अब, हम मानव मन की तुलना किसान की भूमि से करें।

मन, भूमि की तरह, इस बात की परवाह नहीं करता कि हम इसमें क्या बोते हैं। हम जो बोते हैं, वह उसे लौटा देगा, और यह इस बात की परवाह नहीं करता कि हम क्या बोते हैं। मानव मन भूमि की तुलना में कहीं अधिक उपजाऊ, कहीं अधिक अविश्वसनीय और रहस्यमय है, लेकिन यह उसी तरह काम करता है।

हमारा मन इस बात की परवाह नहीं करता कि हम क्या बोते हैं...

विश्वास या भय, अनुकूलन या विरोध, शांत या चिंतित, मूल्य आधारित हों या अवसरवादी हों कठिनाई पर ध्यान दें या परिणामों पर ध्यान दें, सफलता का विश्वास... या असफलता का विश्वास बहुतायत की मानसिकता या कमी की सोच, आशीर्वाद को गिनें या परेशानियों को गिनें नैतिकता पर लंगर डालें या अल्पकालिक लाभ पर लंगर डालें, कार्रवाई के प्रति पूर्वाग्रह या अति विश्लेषण के प्रति पूर्वाग्रह माफ करें और आगे बढ़ें या दुख को पालें और दुखी रहें, हम जो भी बोते हैं, वह हमें प्रचुर मात्रा में वापस मिलता है।

मानव मन वास्तव में जादुई है, इसमें हमारी कल्पना से भी परे धन छिपा है। हम जो भी बोते हैं, वह कई गुना होकर वापस लौटता है।

हृदय ने इतना सब कहा और अपनी वाणी को विराम दिया, मानस की तरफ से कुछ शब्दों की प्रतीक्षा करने लगा।

मानस ने अपने मूल गुणों को जान कर खुशी को ग्रहण किया, स्वयं को ऊर्जावान महसूस किया, हताशा को भूल गया और हृदय का बहुत बहुत आभार प्रकट किया।

हर मनुष्य द्वारा, अपने (मानस की) सर्वोत्तम उपयोग किए जाने की इच्छा प्रकट की और कहा कि मनुष्य जो सोचता है उनकी कल्पना से भी परे उसे परिणाम प्रदान करूंगा..

इस प्रकार मैं आप सभी की खुशियों की कामना करता हूँ, अपने मन को पूर्णतः ऊर्जावान और आनंदपूर्ण रखें।

# माँएं रिटायर कहाँ होती हैं...

**देवेश शर्मा**, अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर आयुक्तालय, उदयपुर

जब से आँख खुली तब से देखा माँ को दौड़ते भागते,
हाँफते, कई काम निबटाते घर, रिश्ते नाते ओर नौकरी भी संभालते।

कभी कभी लगता तू ही है अष्टभुजा धारणी,
कभी लगता ममता करुणा और प्रेम की प्रतिमूर्ति।

चलती रही तेरी दौड़ घड़ी की सुइयों से हमेशा
मसरूफियत में ही बीते तेरे दिन के उजाले और चाँदनी रातें।

तेरी आँखों की उदासियां, तेरी थकन, तेरी अधूरी ख्वाहिशें
खो गईं तेरी ज़िम्मेदारियों की परछाइयों में।

पर अब रिटायरमेंट के बाद तुम जीना अपनी ज़िंदगी,
मिलना उन पुरानी  सहेलियों से जो घर परिवार समाज की
ज़िम्मेदारियों में तुम्हारी तरह खुद के लिए जीना भूल गईं
बतियाना उनसे खिलखिलाना घूमना उनके संग
ओर देखना फुर्सत से दिन के उजाले और चांदनी रातें।

पर सुनती कहाँ है कहती है बेटी अभी तो तेरे बेटे को पालना है
मुझे बनाना है उसे भी तेरी तरह बड़ा आदमी
जब तू हो जाए रिटायर उस दिन तक समझना बताना
मुझको क्यों माँएं रिटायर नहीं होती हैं।

**(सभी वर्किंग महिलाओं को समर्पित)**

# समाज

**पदमाराम**, कर सहायक, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण आयुक्तालय, जोधपुर

समय पुराना था,
आवागमन के साधन कम थे
फिर भी लोग परिजनों से मिला करते थे
आज आवागमन के साधनों की भरमार है।
फिर भी लोग न मिलने के बहाने बनाते हैं।
समाज.....है।

समय पुराना था,
लोग नगर मोहल्ले के बुजुर्गों
का हालचाल पूछते थे....।
आज माँ-बाप तक को वृद्धाश्रम में छोड़ते हैं।
समय..... है।

समय पुराना था,
खिलौनों की कमी थी।
फिर भी मोहल्ले भर के बच्चें
एक साथ खेला करते थे....।
आज खिलोनों कि भरमार है,
पर बच्चे मोबाईल की जकड़ में बंद हैं...।।
समाज.....है।

समय पुराना था,
गली मोहल्ले के पशुओं
तक को रोटी दी जाती थी....।
आज पड़ोसी के बच्चें भी भुखे सो जाते हैं...।।
समाज.....है।

समय पुराना था,
पड़ोसी के घर में आम रिश्तेदार का भी पूरा
परिचय पूछ लेते थे....।
आज तो पड़ोसी का नाम तक नहीं जानते...।।
समाज.....है।
वाह रे आधुनिक एवं सभ्य समाज...।।

# गज़ल

बदलना,
तय है हर चीज का
इस संसार में
बस कर्म अच्छे करें
किसी के दिन बदलेंगे,
किसी का दिल बदलेगा,
किसी का जीवन बदलेगा,
आनंद उनको नहीं मिलता
जो अपने इरादे से...।
ज़िन्दगी जिया करते हैं.....।।
आनंद उनको मिलता है
जो दूसरों के आनंद के लिए।
अपने इरादे बदल दिया करते हैं.....।।

# चित्रकारी

सुश्री उन्नति वर्मा
कक्षा - 9 वीं
पुत्री श्री अरविन्द वर्मा,
अधीक्षक, केंद्रीय वस्तु एवं
सेवा कर आयुक्तालय, जयपुर

श्री लक्ष्य सावनानी
पुत्र श्री गोपाल दास सावनानी,
अधीक्षक, सीमा शुल्क ( निवारक )
आयुक्तालय, जोधपुर,
मुख्यालय - जयपुर

# चित्रकारी

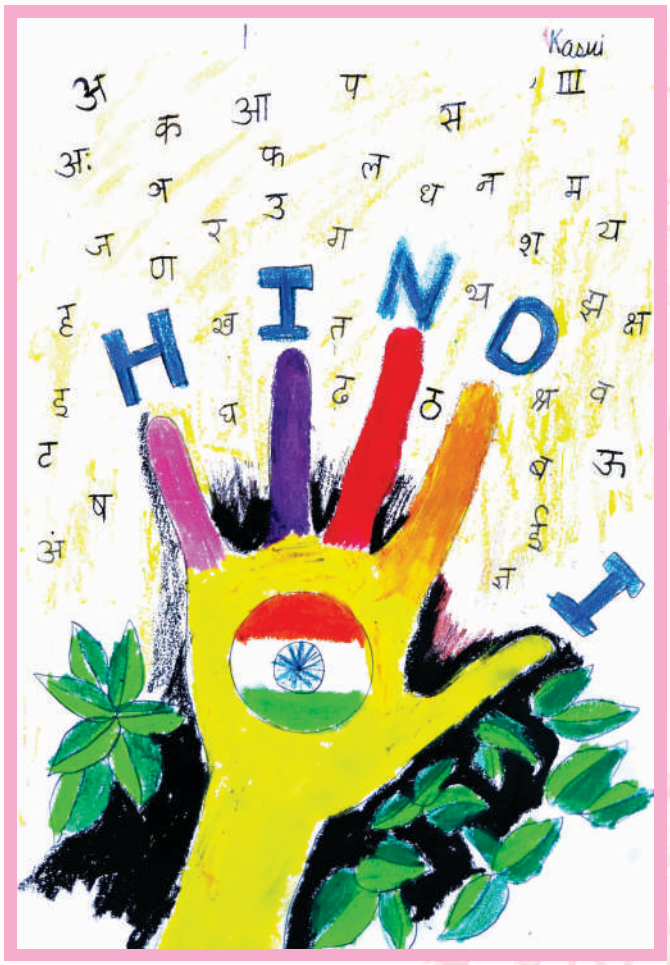

सुश्री कास्वी
कक्षा - 5 वीं,
पुत्री श्री पुष्पेन्द्र सिंह,
कार्यकारी सहायक,
सीमा शुल्क ( निवारक ) आयुक्तालय,
जोधपुर, मु.-जयपुर

# चित्रकारी

सुश्री मिताली गौड़,
पुत्री श्री राजेश कुमार शर्मा,
अधीक्षक,
सीमा शुल्क ( निवारक ) आयुक्तालय,
जोधपुर, मु.-जयपुर

# चित्रकारी

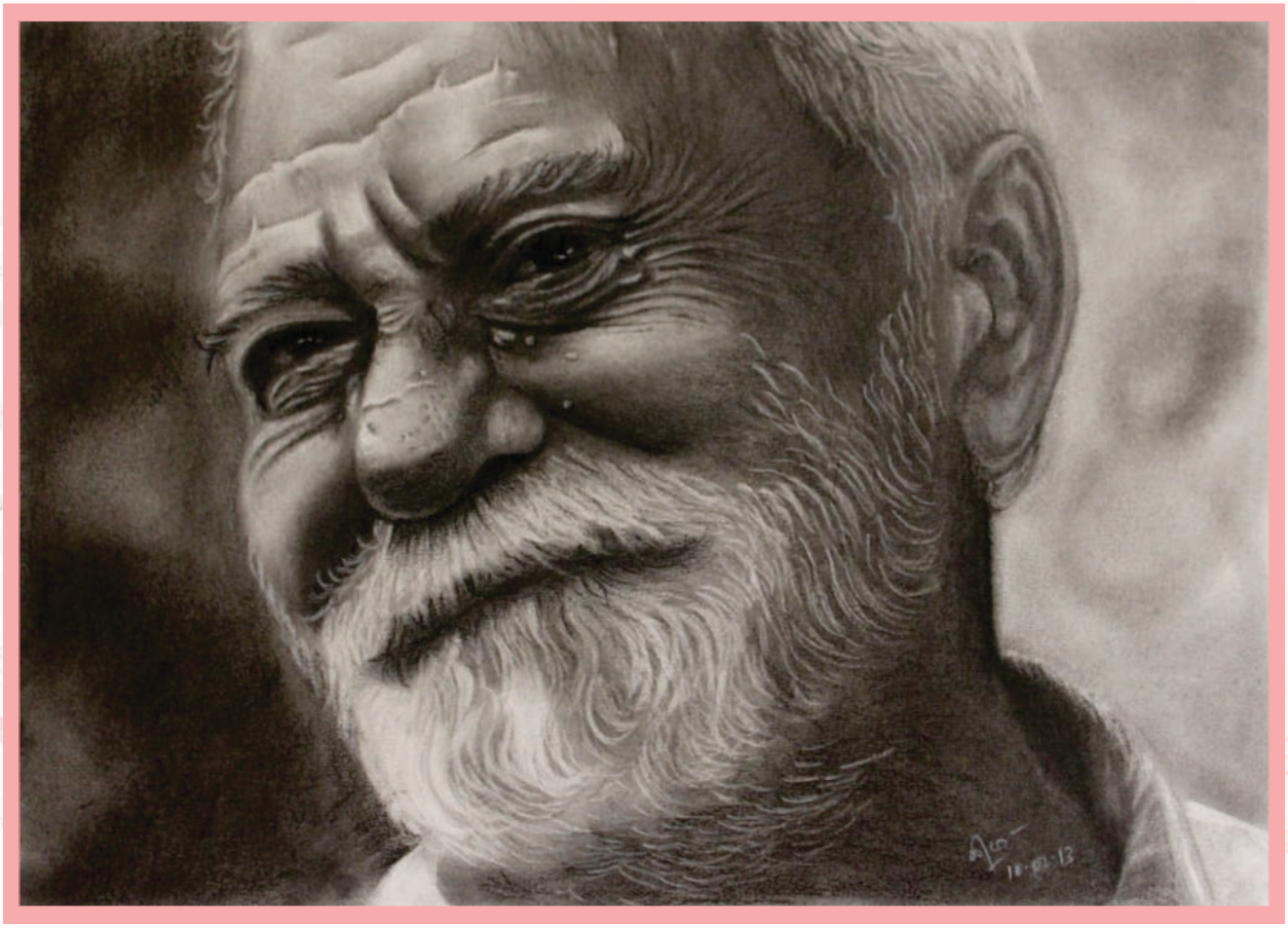

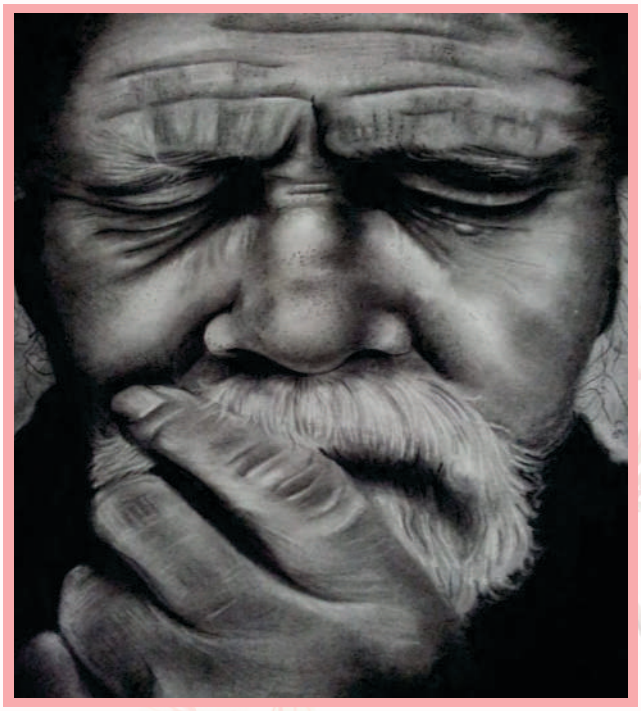

# चित्रकारी

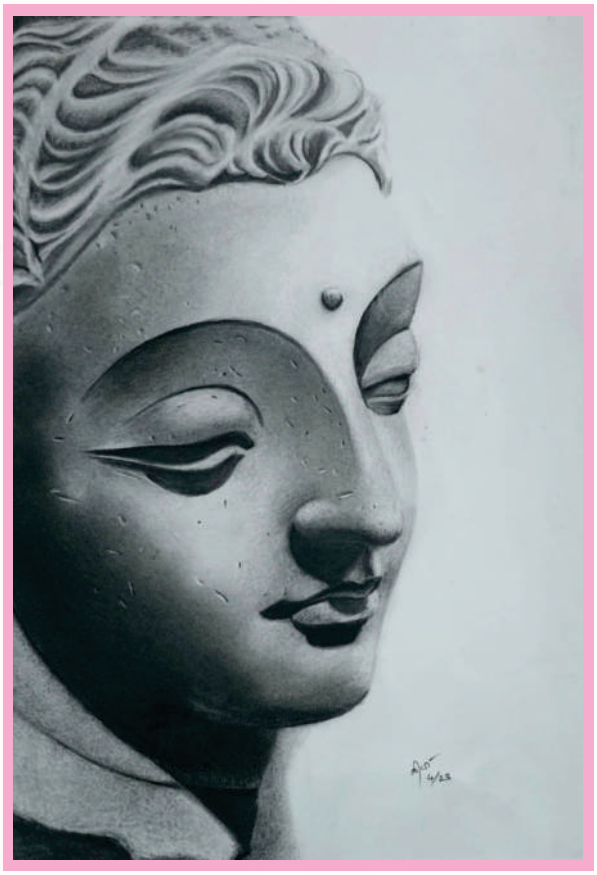

श्री नीरज दुबे
अपर आयुक्त
सीमा शुल्क ( निवारक ) आयुक्तालय,
जोधपुर, मु.-जयपुर

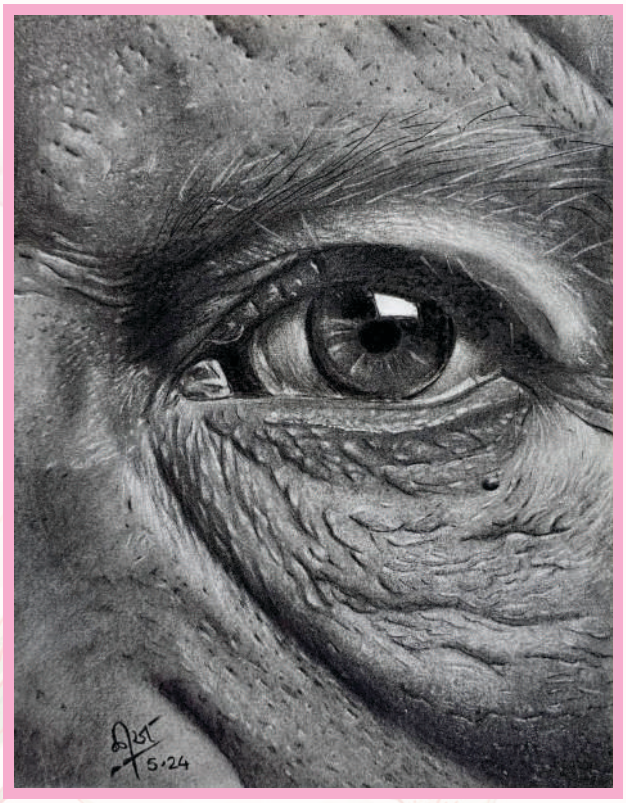

# विभागीय प्रतिभा

वर्ष 2025 में पुर्तगाल में आयोजित विश्व टेनिस मास्टर टूर में 50 से अधिक आयु वर्ग में
श्री जगदीश तंवर, अधीक्षक, सीजीएसटी, जोधपुर द्वारा कप्तान के रूप में भारत का प्रतिनिधित्व किया गया
तथा वर्ष 2024 में कप्तानी कर मैक्सिको में टीम स्पर्धा में देश के लिए रजत एवं ओपन युगल में कांस्य पदक जीता गया।

# माननीय संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा दिनांक 05.03.2025 को कार्यालय आयुक्त, केंद्रीय वस्तु एवं सेवा कर अंकेक्षण, जयपुर का निरीक्षण दौरा

पिछोला झील, उदयपुर

# केंद्रीय वस्तु व सेवा कर एवं सीमा शुल्क, जयपुर

नव केंद्रीय राजस्व भवन, स्टेच्यू सर्किल, जयपुर